17-79

तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

दीवाना





शिक्षा—दुश्मनों के घर में बगैर अच्छी तरह सोचे पैर नहीं

साप्ताहिक भविष्य

१७ मई से २३ मई १६७६ तक
पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : आय में वृद्धि, अफसरों से मेल जोल, ऋण सम्बन्धी कामों में परेशानी, घर पर व्यर्थ का कलह-क्लेश, मित्र सहयोग देंगे, लाभ यथापूर्व होता रहेगा, परिवार से सुख मिलता रहेगा।

वृष : व्यापार में उन्नति, कोई अधूरा काम बन जाएगा, आय आशा अनुसार, यात्रा लाभप्रद, किसी बन्धु से बिगाड़, परिश्रम अधिक, परिवार से कुछ चिन्ता, व्यापार ठीक चलता रहेगा।

मिथुन : हालात ठीक होने लगेंगे, शुभ कामों में रुचि, आय व्यय समान, अधूरा काम पूरा होगा, बड़ों की ओर से चिन्ता, व्यापार ठीक चलेगा, नई वस्तुओं की खरीद, आय भी बढ़ेगी।

कर्क : शारीरिक कष्ट या मानसिक चिन्ता, सुस्ती का प्रभाव रहेगा, हालात कुछ ठीक होंगे परन्तु भाग्य पूरा साथ न देगा, धर्म कर्म में रुचि, अफसरों से मेल जोल, व्यापारिक क्षेत्र में सुधार।

सिंह : व्यापार से यथार्थ लाभ, परिवार से सुख, सेहत को संभाल कर रखें, चोट आदि लगने का भय है, घरेलू समस्याओं से परेशानी, व्यय भी बढ़ेगा, परिश्रम अधिक, कामकाज का बोझ बढ़ेगा।

कन्या : व्यय अति अधिक, कामों में अड़चन बिना कारण ही बढ़ेगी, आय का साधन बनेगा, व्यय कुछ कम, मान बढ़ेगा, परिवार से सुख, काम धन्धा ठीक चलेगा, हालात में सुधार होगा।

तुला : आय उत्तम, यात्रा लाभप्रद, व्यय अधिक और अचानक ही होगा, अफसर वर्ग से कुछ परेशानी, कामों में दिलचस्पी कम रहेगी, आय यथार्थ, व्यापार से लाभ बढ़ेगा, यात्रा में सुख व मान।

वृश्चिक : वातावरण ठीक होगा, सभा समाज के कामों में मान बढ़ेगा, व्यापार की स्थिति संतोषजनक, लाभ भी समय पर होता रहेगा, बड़ों से कुछ चिन्ता, व्यापार मध्यम, व्यय अधिक होगा।

धनु : व्यापार में सुधार, आय में वृद्धि परन्तु मिलेगी देरी से, व्यय यथार्थ, आय उत्तम, परिवार से सुख, अफसरों से मेल जोल, साहस शक्ति दृढ़ रहेगी, आर्थिक लाभ आशा अनुसार होता रहेगा।

मकर : सावधानी से रहें, यात्रा में कष्ट या हानि, व्यय बढ़ेगा, हालात में सुधार, सोशल कामों में रुचि, आय व्यय समान, यात्रा सफल रहेगी, व्यापार ठीक चलेगा, बिगड़ा काम बन जायेगा।

कुम्भ : शुभ सूचना या लाभ, स्त्री पक्ष से चिन्ता, आर्थिक कठिनाई बनेगी, कामों में परेशानी या निराशा का सामना, भाई बहनों से सुख सहयोग, वातावरण ठीक रहेगा, भाग्य साथ देगा।

मीन : मुकद्दमा या सम्पत्ति के कामों में परेशानी, विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा अचानक करनी पड़ेगी, स्त्री को कष्ट, मित्र वर्ग से सहयोग पायेंगे, परिश्रम अधिक. काम बनते रहेंगे।

आपके पत्र

दीवाना अंक १२ मिला, पढ़कर मन को तसल्ली पहुँची, दीवाना का मुख पृष्ठ देखकर हंस-हंसकर दीवाना हो गया चिल्ली, लीला भी बहुत रोचक लगी फिल्मी डायलाग और दीवाने का जवाब बहुत दिनों के बाद पढ़ने को मिला, इसमें अन्य स्तम्भ परोपकारी बात-बे-बात की, बन्द करो बकवास—ठोकर उपन्यास का तीसरा भाग रोचक लगा सिलबिल और आन्तरिक्ष मानव पढ़ा बहुत ही मजा आया। मोटू-पतलू भी रोचक लगा। फैण्टम डियाना का अपहरण पढ़ा, पढ़कर बहुत ही ज्ञान आया हास्य व्यंग्य उस्तादी के चक्कर में पड़कर हँस-हँस कर फूला न समाया।

मदन किशोर होतवानी—रायपुर

'दीवाना' का १६ अप्रैल का अंक प्राप्त हुआ। इस अंक में फिल्म पैरोडी 'मर गया' पढ़कर फिल्म देखकर हुई बोरियत का कोटा पूरा हो गया, पिलपिल सिलबिल, है नहीं दिमाग खराब आपका? तथा परीक्षा में नकल क्यों करें? फ़ीचरों ने तो हंसा-हंसाकर पूरा दीवाना बना डाला।

वाकई 'दीवाना' अब तो इतना हास्य-प्रद बन गया है कि हमें अब शिकायत करने का कोई बहाना ही नहीं मिला। हमारी कामना है कि दीवाना इसी प्रकार हमेशा हमारा मनोरंजन करता रहे।

रमेशकुमार, पृथ्वीराज—जनौली

मुख्य पृष्ठ पर

आगा पीछा देखकर
करके सोच विचार
हमने अपने हाथ में
पकड़ा एक हथियार
पकड़ा एक हथियार
छड़ी को ऊपर घुमाया
मधु मक्खियों ने आकर
रस का आनन्द उठाया

मुझे दीवाना का हर अंक अत्यन्त ही मनोरंजक एवं हास्यपूर्ण लगता है। मेरे लिए इसमें प्रकाशित हर पन्ना उपयोगी लगता है। इसका मुख पृष्ठ बहुत ही सुन्दर एवं मन को मोह लेने वाला होता है। वैसे मुझे 'पिलबिल सिलबिल' मोटू-पतलू; तथा फिल्मी प्रत्येक स्तम्भ अत्यन्त ही मनोरंजक लगते हैं। काका हाथरसी के उत्तर बहुत ही हास्यपूर्ण होते हैं।

उमेश्वर कुमार गुप्त—रामकोला

दीवाना के सभी अंक एक से बढ़कर एक हैं दीवाना का अंक ९ मुझे बहुत ही प्यारा लगा, जिसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती हैं। दीवानी चिपकी के लिए चार दीवाना ले आया, परोपकारी, जरा मुस्कराइये, गरीब चन्द की डाक, मोटू पतलू बहुत ही बढ़िया लगे, उपन्यास ठोकर की लेखक को मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

राजेन्द्र तंवर—बीकानेर

दीवाना अंक १३ प्राप्त हुआ। मुख्य पृष्ठ काफी रोचक एवं आकर्षक था। पहला पृष्ठ खोलते ही चिल्ली लीला' पढ़ कर काफी जोरदार हंसी आ गयी।

'परीक्षा में नकल क्यों करें?' अच्छा लगा। अन्य सभी स्तम्भ ठीक थे।

'नरेन्द्र निर्मल' की आप बड़े वो हैं' हास्य रचना को सारे घर ने बहुत पसन्द किया। कृपया भविष्य में भी ऐसी रचनाओं को स्थान दिया करें।

मैं आपके शीर्षक 'तर्क-कुतर्क' के अन्तर्गत कुछ भेजना चाहता हूं। क्या आप स्वीकार करेंगे? **प्रभात पाण्डेय—लखनऊ**

यदि नये और हास्यास्पद हुये तो अवश्य छपेंगे। —सं०

अंक : १७, १७ मई से २३ मई १९७९ तक
वर्ष : १५

सम्पादकः विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिकाः मंजुल गुप्ता
उपसम्पादकः कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु० द्विवार्षिक : ९५ रु०

कविताएं

अन्तिम इच्छा

—प्रकाश नेमा प्रलय

जेलर ने उन्हें
फाँसी पर
लटकाने के पूर्व कहा—
आप
अपनी अन्तिम इच्छा
बताइये…
उन्होंने घूरते हुए कहा—
मेरी जगह
आप
लटक जाइये…

आफर

अशोक कुमार त्यागी

वर्षों
चूल्हा फूंककर,
कुंवारे पन से ऊबकर,
एक से दो
होने का विचार आया।
तुरन्त अखबार में
एक विज्ञापन निकलवाया।
एक शत प्रतिशत
कुंवारे को
पत्नी की आवश्यकता है।
एक ही सप्ताह में
दो सौ आफर आये।
'मेहरबानी करके
हमारी पत्नी ले लीजिये
यदि तुम्हें भाये।'

(चुटिया वर्ष)

हलचल नगीनवी

लोग
बाल वर्ष में
साल भर तक
बाल नहीं कटायेंगे
अगला वर्ष
चुटिया वर्ष
मनायेंगे।

गधा

आजाद रामपुरी

वे
बोले
हमारा एक सहपाठी हो गया है—
मंत्री,
एक संतरी,
दूसरा पी० ए०,
और तीसरा बी० ए०,
केवल मैं ही,
अभी बेरोजगारी की लाइन में—
आप समक्ष खड़ा हूं
एक चुनाव जीतने की आशा में,
दिल्ली छोड़ देहातों में पड़ा हूं।
सुनते ही बोला एक श्रोता—
श्रीमान जी, जब आपके हर साथी को,
बड़े-बड़े पद मिले हैं!
तो फिर आप ही क्यों—
घोड़ों में गधा निकले हैं?

चप्पल रस

—रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

सड़क को
तेजी से पार करती
महिला को देख
पनवाड़ी के पास खड़े
छैला का दिल मचला;
वह उसके 'आखेट' को बाहर निकला।
पीछा होते देख
वह स्थिति को भांप गई;
एक बार तो कांप गई।
फिर संभल कर,
थोड़ा उछल कर,
उसके मुंह पर
चप्पल जमायी;
बेचारे को
दिन में रात नजर आई।
वह बहुत शरमाया;
यही 'चप्पल रस' कहलाया।

ईमानदारी

—जगदीश सरीन

ना समझी को
समझना
समझदारी है।
सूझबूझ से
बेईमानी करना
ईमानदारी है॥

दृढ़ इच्छा शक्ति

—रामचन्द्र शर्मा 'दुनियादार'

दृढ़ इच्छा शक्ति
मौत को भी हरा सकती है;
और इसकी कमी
दो या तीन ही नहीं
बच्चों की
लाइन भी लगा सकती है।

कुत्ता और आदमी

राजेन्द्र चंचल—धामपुरी

एक बार हमने
काफी परिश्रम किया,
और एक कुत्ते को
आदमी बनाने का उपक्रम किया।
कुत्ता बोला बिगड़कर,
थोड़ा सा अकड़कर—
'हुजूर, मुझ पर कृपा कीजिए,
मुझे कुत्ता ही रहने दीजिए।
कुत्ता भले ही—
कुत्ते का बच्चा है
पर यकीन मानिए
आदमी से फिर भी अच्छा है।'

समारोह

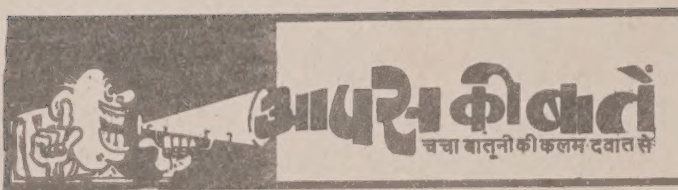
नीलमणि 'नगीना'

बाल वर्ष समारोह मनाते हुए
एक
लगा दूसरे से बताने,
कैसे मनाऊं?
मुझे तो यही नहीं पता
बाल बढ़ाने हैं अथवा कटाने।


जूता तूही रखा
रस्सी कपूर, की तू सिन, राशन रक्षक, ओम भेलपुरी, इंदराजी मुकरगई, म्हस्का मक्खन, सत्यन टप्पू, एकठो मक्खनची और प्रेम झोपड़ा
भाग्यवान, सुनती हो, यह जो इस बुढ़ापे में मेरे सर पर काला विग देख रही हो इसका मतलब समझती हो।
नहीं स्वामी, मुझ बुढ़िया को भी जब जवानी का मेकअप कराते हैं तो मेरी अक़्ल भी काम करना छोड़ देती है।
आप ही बता दीजिए न, कि आपने यह काला विग क्यों पहन रखा है?
क्या तुम हिन्दी फिल्में नहीं देखतीं? मैं हमेशा फ्लैश बैक सीन में यही विग पहनता हूँ। पर यह विग का शॉट इस फ़िल्म में पांच मिनट से ज़्यादा का नहीं है।
क्या मतलब, स्वामी?
मतलब यह कि अब अगला शॉट आँधी और तूफ़ान का है। उसके बाद हम सब डूब जाएंगे।
क्या कहा? डूब जाएँगे? हे भगवान अब क्या होगा?
हा हा हा! डूब तो हमारा सारा जहाज़ जाएगा। पर घबराओ नहीं, वह जहाज़ हमारा नहीं किसी अंग्रेज़ी फ़िल्म का सीन होगा।
तो इस भूचाल के आने से पहले ही मैं आपको और दर्शकों को एक रहस्य बतादूँ। आपके इस छोटे लड़के की सीधी बाँह पर जनम से ही त्रिशूल का निशान है।
क्लाईमेक्स में बिछड़े परिवार को मिलाने के लिए सचिन भौमिक ने ही उसके हाथ पर वह त्रिशूल का निशान बनाया है।
अगले ही क्षण इतनी ज़ोर की आंधी आई कि सारा जहाज़ समन्दर के बीचों बीच डूब गया। पर हिन्दी फिल्मों का चमत्कार देखिए, सारा परिवार बच गया और किसी के शरीर पर एक खरोंच तक नहीं आई।
मैं कहा हूँ, मेरे बीवी बच्चे कहाँ हैं?
बन्द करो बकवास, तुम यहाँ शूटिंग करने आए हो। अपनी पत्नी और बच्चों की चिन्ता को घर में रख कर आया करो।
आप की तारीफ़?
मैं खन्ना एन्ड खन्ना कंपनी का मालिक हूँ।
यह आपकी खन्ना एन्ड खन्ना कंपनी में काम क्या होता है?
आएँ? यह तो मुझे भी नहीं पता। दरअसल इसका पता तो खुद सचिन भौमिक को भी नहीं है।


मां, अब मैं भी जवान हो गया हूँ, मेरे भी मस्ती मारने के दिन आ गए हैं।
हां बेटा, जा खूब मस्ती मार। मैं तो तेरी मां हूँ बेटे। तेरी खुशी ही में मैं हमेशा खुश रहूँगी। वैसे भी तुझे इस फिल्म में मस्ती मारने के अतिरिक्त और काम है ही क्या?
ज़रा गाडी रोकना, भाईसाहब। मुझे ज़रा सामने वाले चौराहे तक छोड़ देना। मेरी माँ बहुत बीमार है, आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।
क्यों नहीं? आईए बैठिए!
अरे, तुमने कहीं शराब तो नहीं पी रखी है? कहीं अपने साथ मेरा भी एक्सीडेन्ट करवा दो।
नहीं नहीं, मैं अब पब्लिक को शराब पी पीके बेवकूफ नहीं बनाऊंगा, अब मैं बिना पिए ही पब्लिक को बेवकूफ बनाऊंगा।
ह-हा! ह-हा!! ह-हा!!!
अपन को पता चलेला ए के तू शीतल खन्ना से प्यार करेला ए, क्या। इसलिए अपन ने सारे हिन्दुस्तान के अखबारों में तेरी मंगनी की खबर छाप दियेल
ओहो, तूने तो गज़ब कर दिया। अगर उसे पता चल गया तो मैं तो सीधा अन्दर ही हो जाऊंगा।
यहाँ शीतल खन्ना भी अपनी मंगनी की खबर व फोटो छपी देखकर चौंक गई थी।
ए मोटी, यह देख दीवाना में मेरी फ़ोटो छपकर आई है, शायद किसी ऋषि के साथ मंगनी हो रही है।
क्या कहा? ऋषि मुनी आ रहे हैं!
दीवाना
अजय को शर्म आनी चाहिए कि एक दो कौड़ी के मैकेनिक होते हुए भी उस ने मेरे नाम से अपना नाम जोड़कर अपनी.... मेरा मतलब है मेरी बदनामी करवाई।
मेम साहब, ये तुम्हारी और उसकी नहीं, ऋषि कपूर और नीतू सिंह की मंगनी की खबर है।
मिस शीतल खन्ना, आपकी मंगनी तो मेरे साथ होनी चाहिए। तुम्हारा सारा करोड़ों रुपयों का बिजनेस मैंने ही तो सम्भाला है। क्यों, क्या मेरा कोई हक नहीं है?
बेशक तुम में लड़की को लुभाने वाली हर बात है। खूबसूरत हो, जवान हो, पढ़े लिखे हो, किसी लड़की को 'मदहोश' करने वाली हर चीज़ है तुममें।
पर एक चीज़ की कमी है।
कौनसी कमी?
तुम इस फ़िल्म के हीरो नहीं, विलेन हो। आज तक हिन्दी फिल्मों में किसी हीरोइन ने विलेन से शादी की है?
विलेन तो मैं हूँ इस फ़िल्म का। तुम तो इससे शादी इसलिए नहीं कर सकती हो क्योंकि इस फ़िल्म में यह तुम्हारे होनेवाले पति का भाई है।
हां हां, मेरे कहने का मतलब भी यही था।


शीतल खन्ना एक गरीब प्रेस रिपोर्टर का रूप धारण करके अपने प्रेमी की 'तलाश' में निकल पड़ी।
मैं एक गरीब प्रेस रिपोर्टर हूँ। आपके मॅकेनिक अजय ने मेरी कार में से मेरा रूमाल और चश्मा चुरा लिया है। मैं वह वापस लेने आई हूँ।
जिस रास्ते यहाँ आई हो उसी रास्ते उलटे पैर घर चली जाओ। रूमाल और चश्मा खो गया है तो पुलिस में जाकर रिपोर्ट लिखवाओ, यहाँ क्या है?
ओहो! पिंटो! तुम समझते क्यों नहीं? बेकार इस बेचारी गरीब को डांट रहे हो।
हां तो देवीजी, मैंने ही आपका रूमाल और चश्मा चुराया है। वह इसलिए क्यों कि मुझे आप से प्यार हो गया है।
बस बस! मिल गया, मुझे जिसकी तलाश थी। अब मुझे पता चल गया है कि तुम मुझसे प्यार करते हो, मेरी दौलत से नहीं। दरअसल मैं ही करोड़पति बाप की इकलौती बेटी शीतल खन्ना हूँ।
क्या? तो तुमने मुझ से झूठ कहा? अब मुझे तुम से सख्त नफरत हो गई है क्यों कि मैं झूठ बिलकुल पसंद नहीं करता हूँ। हां, झूठ बोल ज़रूर लेता हूँ।
आज शीतल खन्ना का जन्म दिन है। हिन्दी फ़िल्मों के लेखक फिल्म के अन्त में एक पार्टी सीन रखना बहुत ज़रूरी समझते हैं और इस सीन के लिए उन्हें हीरो या हीरोईन के जन्म दिन के अतिरिक्त और कोई बहाना नहीं मिलता। इसी सीन की मदद से बिछड़े मिल जाते हैं दूध(हीरो) और पानी(विलेन) का पता चल जाता है। सच्चे का बोल बाला हो जाता है; झूठे का मुंह काला हो जाता है। पर यहाँ इस पार्टी में हमारा हीरो ही झूठ कहता है कि वह राजकुमार है, और उसकी माँ वहीं भरी पार्टी में आकर उस झूठे का मुंह काला करदेती है।
यह देखो मैंने इसका मुंह काला कर दिया है। अब तो आप सबको यकीन हो गया कि यह राजकुमार नहीं मोटर मॅकेनिक है।
ओफ़ ओ!!
तूने सारा खेल बिगाड़ दिया माँ। अगर आज तू आकर मेरा भांडा नहीं फोड़ती तो मैं करोड़पति हो गया होता।
अब भी कुछ नहीं बिगड़ा बेटे, बल्कि बन गया। मुझे इस बुढ़िया को देखकर याद आ गया है कि तुम ही मेरे बिछड़े हुए बेटे हो। अब तुम ही शीतल खन्ना से शादी करना।
नहीं नहीं। शीतल खन्ना से शादी मैं करूंगा। क्योंकि मैं भी आप ही का बेटा हूँ। यह देखिए मेरी बाँह पर त्रिशूल निशान का सुबूत!
सारा बिछड़ा हुआ परिवार मिल जाता है। पर फिर कहानी एक ज़बर्दस्त मोड़ ले लेती है। प्रेम शीतल खन्ना को कार में बिठाकर भाग जाता है। दोनों भाई उसका पीछा करते हैं। जंगल के बीचों बीच दोनों भाई प्रेम की खूब मरम्मत करते हैं तभी वहाँ अचानक कहीं से पुलिस आजाती है और प्रेम को गिरफ्तार कर लेती है।
तुम्हें किसने खबर की? किसने यहाँ भेजा?
रवि टंडन ने।
Husain Zamin
विलेन के गिरफ्तार होते ही हीरो के सारे दुख दर्द ऐसे गायब हो जाते हैं जैसे गधे के सर से सींग।
बारा बजे की सूईयों जैसे हम दोनों मिल जाएं।
समाप्त



आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

महेश बग्गा—इन्दौर : आप दिल के पुजारी हैं या दौलत के ?

उ० : उस दौलतमन्द के जो दिलदार हो।

चतुर्भुज ए० बजाज—अमरावती : चाचा जी, आपकी और चाची की आपस की बातों में कितनी दीवानगी होती है ?

उ० : केवल इतनी कि हमारे पड़ौस में कोई किरायेदार दो दिन से अधिक नहीं टिकता।

जगजीत सिंह राणा—दिल्ली : चाचा जी, अपने दीवानों को दीवानगी भरा कोई शेर सुनाइये।

उ० : है अजब रंग की वहशत तेरे दीवाने में,
जी न आबादी में लगता है ना वीराने में
जिस तरह आदमी मर मर के जिये जाता है,
वो मजा है कहां पूरी तरह मर जाने में।

हरविन्द्र सिंह—जबलपुर : क्या यह बात सही है कि फैंटम ने आप के मुँह पर घूंसा मारा था, जिससे आपकी शक्ल इतनी बिगड़ गयी है ?

उ० : सही यह है कि उस घूंसे से फैंटम के हाथ पर खोपड़ी का वह निशान पड़ गया है कि बच्चू सारी उम्र याद रखेगा।

रोशन व्यास—इन्दौर : प्यारे चाचा जी, नेता की बीबी और अभिनेता की बीबी में क्या अंतर है ?

उ० : प्यारे भतीजे, यदि सब एक जैसे हों तो किसी की बीबी में भी कोई अंतर नहीं होता।

कृष्ण राज गिरी—दुलिया जान : जवानी की पहचान क्या है ?

उ० : हर दीवार से सर टकराने को जी करता है और देखने वाले कहते हैं :
हर अदा मस्ताना सर से पाँव तक छाई हुई,
उफ तेरी जालिम जवानी जोश पर आई हुई।

संजय वार्ष्णेय—गया : दूल्हे को घोड़ी पर ही क्यों बिठाते हैं गधे पर क्यों नहीं ?

उ : हमने अपने विवाह पर एक मित्र से यह प्रश्न किया था, तो उसने उत्तर दिया था, अजीब बात कर रहे हो यार, भला गधे को भी कोई गधे पर बिठाता है !

राम अवतार—परवाना, अलीगढ़ : लिखने लिखाने में काफी प्रयास के बाद मैं इस नतीजा पर पहुंचा हूं, कि पत्रिकाओं के लिए लिखना एक ऐसा काम है, जिसके लिये कोई धन्यवाद तक नहीं कहता, आप का क्या विचार है।

उ० : हम आपकी बात से सहमत नहीं, हम तो किसी की कोई रचना लौटाते हैं तो धन्यवाद सहित लौटाते हैं।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : आप की कुर्सी के लिए इलैक्शन कब हो रहा है ? मैं इसके लिये इलैक्शन लड़ना चाहता हूं।

उ० : आप जब लड़ना चाहें हम तभी लड़ा देते हैं, पर इतना याद रखिये, जिस कुर्सी के लिये आप अपनी टांगें तुड़वाना चाहते हैं उनकी तीन टांगें टूटी हुई हैं।

संजीव कुमार मलहोत्रा—बीकानेर : मेरी पत्नी जब भी मुझे देखती है तो नाक भौं चढ़ा लेती है उसे खुश रखने के लिए कोई मशवरा दीजिये।

उ० : क्या मशवरा दें आपको, हमारी बात का असल मतलब किसी को समझ तो आता नहीं, कुछ दिन पहले हमने अपने एक मित्र को इसी समस्या का समाधान बताते हुए कहा था, पत्नी खुश होती है पति की सुन्दरता से, उसकी सेहत से और तुम हो कि तुम्हारी तोंद फूलती जा रही है और जिस्म पर इतनी चर्बी चढ़ने लगी है कि खाल लटक आई है, तुम ऐसा करो कि एक सप्ताह तक कम से कम दस मील रोज पैदल चलो फिर बात करना"। वह मित्र हमारा मशवरा लेकर खुशी-खुशी घर चले गये और कई रोज तक उनसे भेंट नहीं हुई। ठीक एक सप्ताह बाद उनका फोन आया, हमने पूछा, 'कहिये हमारे मशवरे से कुछ लाभ हुआ ? क्या अब भी आप की पत्नी आपको देख कर नाक भौं चढ़ाती है ?' फोन के दूसरी ओर से आवाज आयी, 'पता नहीं, मैं तो दस मील रोज के हिसाब से पैदल चलकर अपने घर से सत्तर मील दूर निकल आया हूं और वहीं से बोल रहा हूं।



विनोद पुरी 'रंजू'—लुधियाना : प्रेमिका से शादी की बात किस समय करनी चाहिए ?

उ० : जब इस बात का विश्वाश हो जाए कि अस्पताल और पुलिश स्टेशन में आप को पक्की जानकारी है।

खान निगार वार्सी—शाहजहांपुर : सुना है आप बहुत पियक्कड़ हैं दिल्ली में ठेके बहुत कम हो गये हैं, नशाबन्दी का आप पर क्या असर हुआ है ?

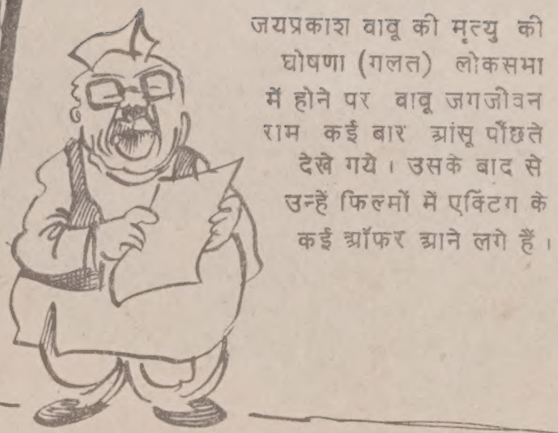
उ० : उन ठेकों को कौन पूछता है ? मोरार जी भाई देसाई वाला ठेका तो हर समय साथ होता है, अब बहुत पुराना एक शेर सुना होगा आपने :
गम है क्या अब दिल में है तस्वीरे यार
जब जरा गर्दन झुकाई देख ली।
और नशाबंदी की पालिसी पर हम कहते हैं
बन के मैं देसाई भाई जी लिया,
जब जरा गर्दन झुकाई पी लिया।

शंकर लाल शर्मा—गुड़गावां : मैं आप के लिये हर बात का इंतजाम कर सकता हूं, आप मुझे अपने यहां नौकर रखें तो कितना वेतन देंगे ?

उ० : दस हजार रुपया महीना पर यह सोच लीजिये कि क्या आप हर महीने दस हजार रुपये का इंतजाम कर सकेंगे ?

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

अफवाह हैं



जयप्रकाश बाबू की मृत्यु की घोषणा (गलत) लोकसभा में होने पर बाबू जगजीवन राम कई बार आंसू पोंछते देखे गये। उसके बाद से उन्हें फिल्मों में एक्टिंग के कई ऑफर आने लगे हैं।

देश भर के कच्ची शराब बनाने वालों ने पेशकश की है जब तक मोरार जी प्रधानमंत्री रहेंगे तब तक वह जनता पार्टी चलाने का व चुनाव का सारा खर्च उठाते रहेंगे। जनता पार्टी को किसी और से चंदा मांगने की जरूरत नहीं।





बीजू पटनायक पर आर्थिक अनियमितताओं के सौ से अधिक मुकदमे इस समय चल रहे हैं। बीजू पटनायक जानना चाहते हैं कि एक व्यक्ति पर अधिक से अधिक सरकारी मुकदमे चलने का विश्व रिकार्ड क्या है?



जेमिनी सर्कस वालों ने श्री चन्द्र शेखर को जनता पार्टी का अध्यक्ष पद छोड़ने के बाद अपने यहां काम देने की पेशकश की है। वे रिंग मास्टर बन कर एक साथ कई तरह के जानवर स्टेज पर पेश करेंगे।



कई जनता नेताओं के सुपुत्रों ने इतना नावां कूट लिया है कि वह सोते में भी प्लाटों की करोड़ों रुपये की बोली लगाते सुने गये हैं। ख्याल है कि वे सपनों के देश के प्लाट पर प्लाट खरीदते हैं रात भर।



विदेशी दौरों के कारण अटल बिहारी वाजपेयी ने इतनी हवाई यात्रायें की हैं कि प्रमुख हवाई कम्पनियां कई बार गलती से बाजपेयी को अपने ही विमान का कर्मचारी समझने की गलती कर बैठती हैं।

प्रसिद्ध फिल्म स्टारों की १९७९-८० के बजट पर प्रतिक्रियायें



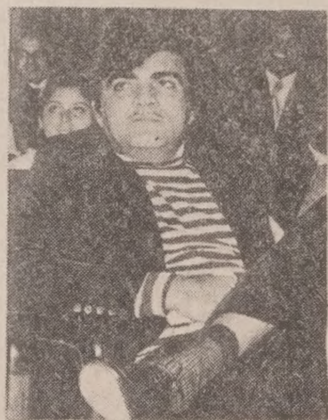
रेखा

पेट्रोल की कीमत बढ़ा कर बहुत अन्याय किया गया है। यह गरीब जनता पर जुल्म है। अब जब भी मैं अपने बॉय फ्रैन्ड के साथ कार में खंडाला जाऊंगी तो कितना खर्च आयेगा ?



जीनत अमान

साबुन बहुत ज्यादा महंगा हो गया है। साबुन की टिकिया चमचमाती हीरे जितनी कीमती करना ठीक नहीं है।



महमूद

यह बजट हम कॉमेडियनों के विरुद्ध है। टूथपेस्ट महंगा होने से लोग ब्रुश कम करेंगे ! दांत मैले होने के कारण लोग दांत नहीं दिखायेंगे। दांत नहीं दिखायेंगे तो नहीं हंस पायेंगे।



संजीव कुमार

यह बजट तो किसानों तुम्हारे लिये है। और शहर वालों हमारे तुम्हारे भाग में छाती पीटना आया है।



टीना मुनीम

बजट में चिऊइंगम पर जो टैक्स लगा है वह गलत है। चिऊइंगम तो गरीब आदमी के खाने की चीज है। एक चिऊइंगम से घंटों मुंह चलाया जा सकता है।



हेमा

धर्मेन्द्र ने मुझे बताया कि चौधरी चरण सिंह के बजट से जाट किसानों का फायदा होगा। इसलिये मैं तो इसे बहुत अच्छा बजट कहूंगी।



राजकपूर

जब मैं बम्बई में होता हूं तो मुझे यह बजट गरीब मार लगता है लेकिन जब मैं पूना अपने फार्म पर चला जाता तो बजट बहुत सही लगता है। इसलिये मैं ठीक से कुछ कह नहीं सकता।



जितेन्द्र

इस बजट से ग्रामीणपन की खुश्बू आती है। पहली बार सच्चाई से हमारा परिचय हुआ है। हमारा फर्ज है कि हम इस बजट का स्वागत करें।



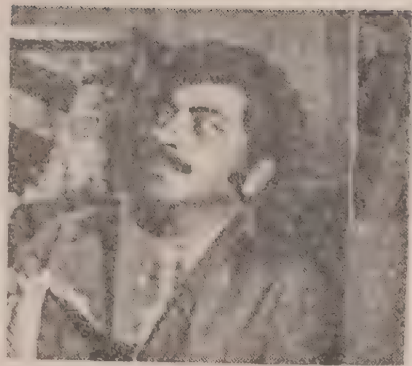
परवीन बॉबी

सिगरेटों पर टैक्स नहीं लगाना चाहिये। अब जब भी मैं कबीर बेदी की याद में सिगरेट पीऊंगी तो कबीर की याद के साथ-साथ पनवाड़ी के बिल की भी याद आयेगी—



रंजीता

मैंने अब तक यह बजट केवल अंखियों के झरोखों से देखा है। जब अपने पर्स के झरोखे से इसे देखूंगी तब पता लगेगा कि यह क्या है?



अमजद खां

क्यों रे कालिया, यही हैं वह टैक्स जो रामगढ़ की तबाही के लिये लगाये गये हैं। ह, ह, ह, ह, इधर आओ...ह ह ह ह...टैक्स...टैक्स!



दिलीप कुमार

कौन कहता है कि देवदास गम भुलाने के लिये पीता है? देवदास तो इसलिये पीता है कि शराब ही ऐसी चीज है जिस पर पिछले तीन साल से टैक्स नहीं बढ़ाया गया है।



ऋषि कपूर

मेरा तो यह ख्याल है कि चरण सिंह मेरे से भी ज्यादा जहरीला इन्सान है।



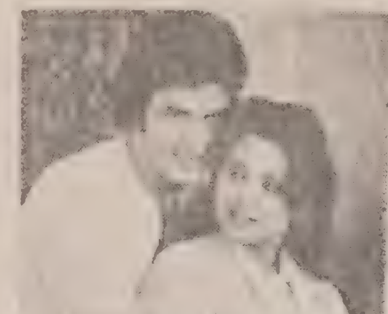
रामेश्वरी

मुझे बजट से क्या लेना है। मेरा रक्षक तो बकरा है। जो कोई टैक्स लेने आयेगा उसे बकरा मारेगा। सब लोगों को एक-एक ऐसा बकरा पालना चाहिये।



विनोद खन्ना

यह बजट कैसा है? मैं आचार्य रजनीश के प्रवचन सुनने के बाद ही बता सकता हूं।



नीतू सिंह

यह बजट बहुत अक्लमंदी से बनाया गया है। साबुन, डिटर्जेन्ट और मेक अप के सामान पर लगा टैक्स लोगों को नहाने धोने से दूर रखेगा और सब ऋषि जैसे नजर आयेंगे।

नया धारावाहिक उपन्यास

ठोकर

-लेखिका संगीता

भाग ८

एक दिन सरिता रात में पढ़ने आई तो उसने पढ़ाई शुरू करने से पहले पूछा—

"तुम्हारी बुग्रा हमेशा तुम्हारे साथ रहती हैं ?"

"हाँ...कम से कम जब से मैंने होश संभाला है उन्हें यहीं देखा है।"

"लगता है वह मुझे अच्छी दृष्टि से नहीं देखतीं।"

"उनकी चिन्ता न करो...हमारे पिताजी और माँ बहुत साफ दिल के लोग हैं...और उन्हें किसी प्रकार का सन्देह नहीं होना चाहिए।"

'यह मैं भी अनुभव करती हूं...मगर विश्वास करो तुम्हारी बुग्रा के मन में तुम्हारे या तुम्हारे पिता के प्रति कोई सहानुभूति नहीं—यह मेरा अनुभव है—और उनकी छोटी लड़की राधा भी अच्छी नहीं मालूम होती—बुरा मत मानना तुम्हारी बुग्रा की लड़की है—।'

विनोद आश्चर्य से सरिता को देखता रह गया...कितना सही अनुमान लगाती है यह लड़की...न जाने जीवन के कौन-से अनुभवों की गोद में पलकर बड़ी हुई है।

बीस-बाइस दिन गुजर गये।

इधर दो-तीन दिन से वह ऐसा व्यस्त रहा कि राजेश, मोहन और सुरेन्द्र से भी न मिल सका—काम...वही मेहमानों का प्रबंध करना था...न चाहते हुए भी वह यह सब कुछ कर रहा था...उसे खुशी थी तो केवल फूलवती के आने की...लेकिन मन में यह शंका भी लगी हुई थी कि शायद बुग्रा के बच्चों में फूलवती सम्मिलित ही न हो... अगर वह न आई तो क्या होगा ?...पांच बज चुके थे...वह सारा दिन भागते-भागते थक गया था...कुछ देर राजेश और सुरेन्द्र के साथ किसी होटल में गुजारने के विचार से वह राजेश की बैठक पर गया...राजेश वहाँ नहीं था...सुरेन्द्र और मोहन भी अपने घरों पर नहीं मिले...आखिर अकेले ही वह होटल की ओर चल पड़ा।

होटल के पास ही उसे मोहन मिल गया...वह अभी-अभी होटल से निकला था ...मोहन ने विनोद को देख तो लिया था किन्तु उससे आंखें चुराकर खिसक जाना चाहा...विनोद ने झट आगे बढ़कर उसका हाथ पकड़ लिया...मोहन के तेवर कुछ अच्छे नहीं थे—।

'क्या नाराज हो ?' विनोद ने पूछा।

'नहीं तो—।' मोहन ने रुखाई से उत्तर दिया।

'आओ...चाय पियेंगे...।'

'नहीं—धन्यवाद...मैंने अभी पी है।' मोहन का स्वर बहुत रूखा था।

'अबे...चल तो सही।' विनोद ने उस की पीठ में घूंसा जड़ दिया और उसे खींचता हुआ साथ होटल में ले गया।

मोहन काफी उखड़ा-उखड़ा-सा लग रहा था...कुछ देर की बात-चीत में वह खुल गया...अब विनोद को मालूम हुआ कि मोहन का मूड क्यों बिगड़ा हुआ था—सुरेन्द्र ने मोहन के विरुद्ध उसके बहुत कान भरे थे—और विनोद के प्रति उसके मन में व्यर्थ ही बोध-भ्रम उत्पन्न करने का प्रयत्न किया था...उसने मोहन से यह भी कहा था कि सरिता और विनोद के आपस में अनुचित सम्बन्ध हैं...और इस बात को सारा मुहल्ला जानता है...अगर वह लोग विनोद के साथ रहेंगे तो वह भी बदनाम हो जायेंगे...लेकिन विनोद ने किसी बात पर भी कोई क्रोध व्यक्त नहीं किया—जब मोहन सब कुछ कह चुका तो विनोद ने हंसकर कहा—

'अबे...इन सब बातों पर विश्वास करने से पहले मुझ से तो पूछ लिया होता।'

'यार...क्या बताऊं...सुरेन्द्र ने इस स्वर में कहा था कि मुझे विश्वास आ गया।'

'मान लो...अगर मैं ऐसा ही होता तो तुम क्या करते ?'

'नहीं...मुझे विश्वास है तुम ऐसे नहीं हो सकते।' मोहन ने स्वर में आत्मीयता उत्पन्न करने का प्रयत्न करते हुए कहा।

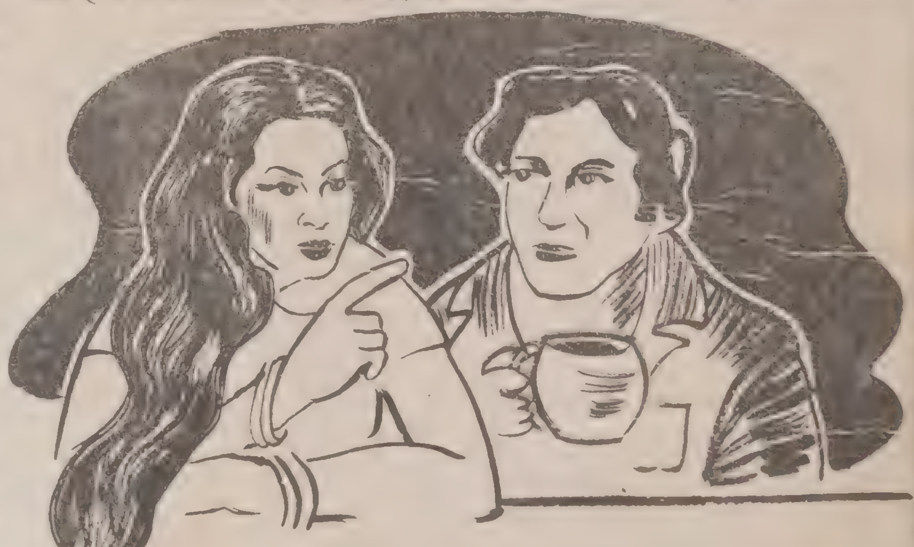
'कहो तो मैं सुरेन्द्र से पूछूं ?'

'नहीं छोड़ो...जब मुझे ही विश्वास नहीं है तो पूछताछ का प्रश्न ही नहीं उठता :

'और इसीलिए तुम्हारी ओर से पीठ मोड़कर जा रहा था।' विनोद ने हंसकर कहा।

'बस यार...अधिक ताने मत दो...मैं वैसे ही लज्जित हूं...।' मोहन ने नजरें झुकाकर कहा।

फिर वह लोग उठ गये...बहुत देर तक वह मोहन के चुटकुलों का आनन्द लेता रहा ...छः बजे के बाद घर पहुंच गया...अभी



वह खाना खाकर उठ भी नहीं पाया था कि राजेश ने आवाज दी—विनोद ने उसे रुकने को कहा और खाना खा चुकने के बाद राजेश के पास चला आया···राजेश का मूड खराब तो नहीं था···वह कुछ गम्भीर था···।

'एक बात बताओ···' विनोद के आते ही राजेश बोला।

'अरे, कुशल तो है।' राजेश के स्वर की गम्भीरता पर विनोद चौंक पड़ा।

'यह बताओ···क्या मैंने तुमसे प्रार्थना की थी कि मुझ से दोस्ती बढ़ाओ?'

'क्या मतलब ?'

'मतलब यह कि जब तुम्हें पता था कि मैं अच्छा आदमी नहीं हूं तो मुझ से दोस्ती क्यों बढ़ाई ?'

'ओह !' विनोद ने ठंडी सांस ली, 'दोनों ओर से मोर्चा बन्दी हुई है।'

'कुछ नहीं विनोद...सुरेन्द्र और मोहन के बीच मैं तुम्हें ही एक ऐसा आदमी समझता था जो सच्चा दोस्त सिद्ध हो सकता है···लेकिन मैंने यह नहीं सोचा था कि आज कल दोस्त ढूँढ़ना भी मूर्खता में सम्मिलित है—।'

'और कोई डायलाग रह गया हो तो बोल डालो।' विनोद ने हंसते हुए कहा।

'जरूर मजाक उड़ाओ विनोद···!' राजेश ने ठंडी सांस ली, 'मैं एक गरीब विद्यार्थी ट्यूशन करके अपनी शिक्षा का खर्चा पूरा करता हूं···मुझे क्या अधिकार है किसी को दोस्त बनाने का···दोस्त तो उनके होते हैं जिनकी जेब में होटलों पर चाय पिलाने के लिए पैसे हों···सिनेमा दिखाने के लिए पैसे हों···लेकिन मैं यह सब नहीं कर सकता इसलिए मुझे किसी को दोस्त कहने या बनने का कोई अधिकार नहीं।'

'तुम गधे भी हो और भावुक भी हो।' विनोद ने राजेश की पीठ थपथपाई, मैं तो दर्पण हूं···जैसी अपनी छवि देखना चाहोगे वैसा ही व्यवहार करना···अगर तुम मुझ से दोस्ती के इच्छुक हो तो मैं तुम्हें निराश नहीं करूंगा···मैं दोस्ती शब्द का महत्व समझता हूं···तुम अच्छे आदमी हो बस तुम में एक कमी है कि तुम हर एक की बात पर विश्वास कर लेते हो···तुम्हें और मोहन को मुझसे अलग करने के लिए यह एक षड्यन्त्र था···अब मोहन से मिलो तो वह तुम्हें बतायेगा कि सच क्या है···इसके बाद मेरे पास आना।'

यह कहकर विनोद घर की ओर मुड़ गया···राजेश वहीं खड़ा देखता रह गया—।

थोड़ी देर बाद सरिता आ गई और विनोद सरिता को पढ़ाने बैठ गया। नौ बजे रात को वह सरिता को पढ़ाकर उठा··· सर्दी बढ़ गई थी···उसने स्कार्फ कानों से लपेटा और नीचे उतर आया···उसका विचार होटल तक जाकर एक प्याली चाय पीने का था···नीचे उतरते ही बिजली के खम्भे के पास उसे राजेश खड़ा दिखाई दिया। विनोद उसे देखकर हंस पड़ा और राजेश बढ़कर उससे लिपट गया।

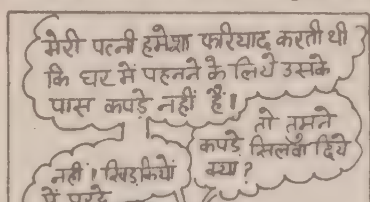
'आज से हम दोनों गहरे दोस्त हैं।' राजेश ने कहा।

'हैं—लेकिन अब तुम किसी की बातें सुनकर मेरे विरुद्ध कोई झूठी धारणा मत बना लेना।'

'वह मेरी भूल थी···क्षमा कर दो।'

विनोद ने हंसकर फिर राजेश को लिपटा लिया और दोनों होटल की ओर चले गए।

प्रदर्शनी आरम्भ होने में केवल दो दिन बाकी थे···उस दिन बारह बजे की ट्रेन से बुआ गांव से आने वाली थी···सुबह से ही

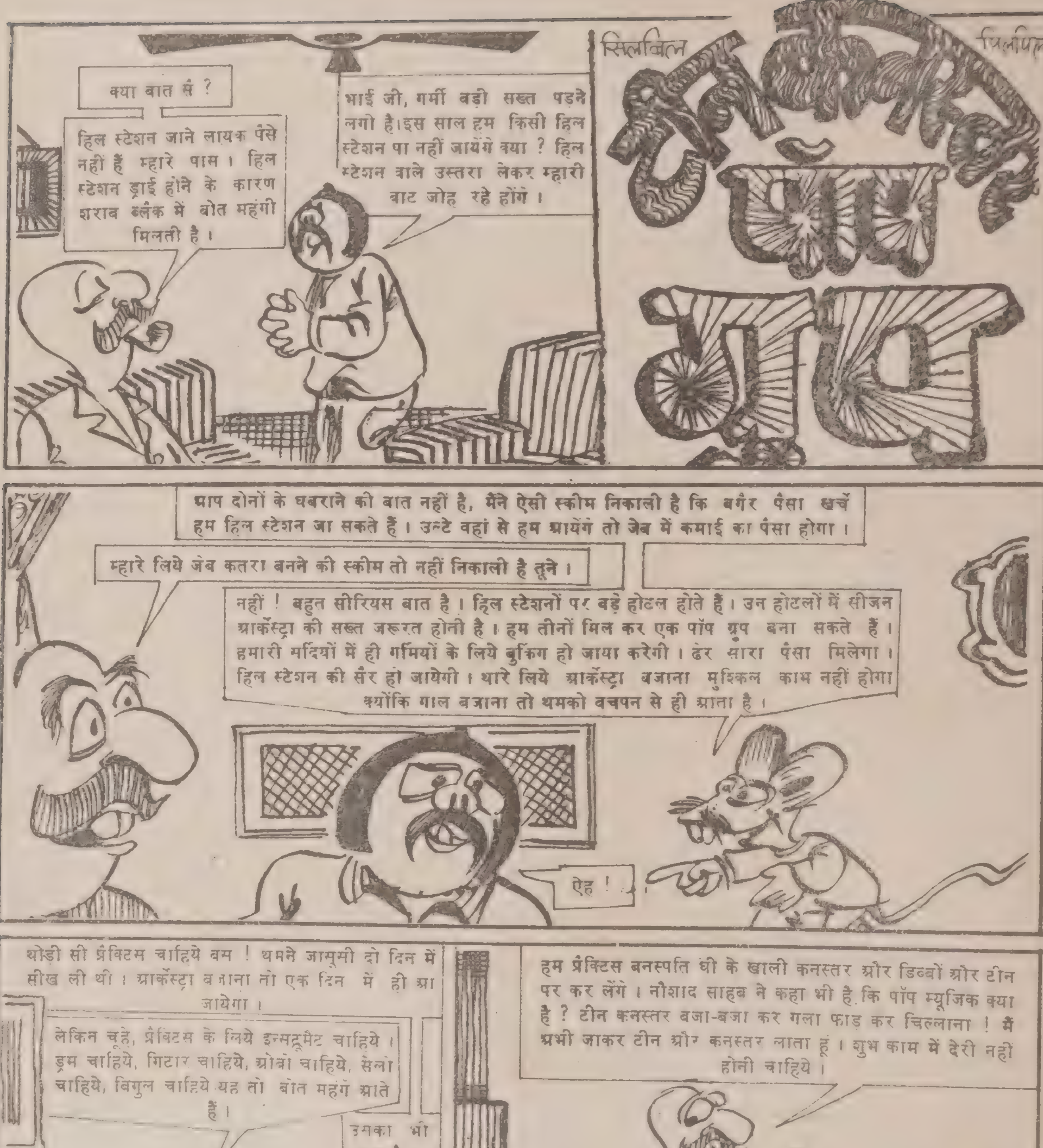


पिता जी और बुआ बहुत खुश थीं···गांव वाली बुआ वैसे तो पिता जी की मुंह बोली बहन थीं लेकिन पिता जी उन्हें बिल्कुल सगी बहन के समान चाहते थे···उस दिन पिता जी ने विनोद को स्कूल भी नहीं जाने दिया और उसे दस बजे ही स्टेशन पर भिजवा दिया।

खुश तो विनोद भी था लेकिन उसे धड़का लगा हुआ था कि जाने फूलवती आए या न आए···अगर वह न आई तो ? इससे आगे वह सोच ही न पाता था···रिक्शा करके स्टेशन पहुंचा और प्लेटफार्म पर टहलने लगा···इस समय अपने मन में वह अनजान-सी खुशी अनुभव कर रहा था··· और यह एक प्रकार की अन्तर की सूचना थी कि फूलवती जरूर आएगी···।

टहलते-टहलते अचानक उसके मस्तिष्क में एक प्रश्न उठा—उसे फूलवती के आने की खुशी क्यों है ? क्या अकारण ही वह उल्लास के इन चंद अस्थाई क्षणों को मन में स्थान देकर भविष्य के लिए एक निरन्तर कसक के बीज तो नहीं बो रहा ? फूलवती की सगाई हो चुकी है···वह किसी दूसरे की पत्नी बनने वाली है···फिर वह इतना प्रसन्न किस लिये हो रहा है ? केवल चंद दिन उसके साथ रहने के लिए···उसे देखने के लिए ? यह तो ठीक नहीं···वह फूलवती से क्या चाहता है ? वह तो अब किसी दूसरे की अमानत है···उसे फूलवती की ओर किसी अनुचित भावना से देखना भी नहीं चाहिये···उसकी वर्तमान सामाजिक स्थिति को स्वीकार करना चाहिए···यह सब वह समझता था और मानता था किन्तु क्या करे कि हृदय बुद्धि के सभी तर्कों को ठुकराए जा रहा था···हृदय तो केवल यही जानता था कि वही फूलवती आ रही है जिसके साथ बचपन में उसे विशेष लगाव था···जिसके साथ एक ही बिस्तर पर वह बाहों में बाहें डालकर सोया है···चिड़िया-चिड़े की कहानियां सुनी हैं...और जिसे वह पांच वर्षों से देख नहीं पाया···पूरे पांच वर्ष उसने बिना फूलवती के बिता दिये किन्तु उसकी छवि वह एक क्षण के लिये भी अपने मन से दूर नहीं कर सका···वह अजीब असमंजस में था और असमंजस के इन क्षणों में उसे पता भी नहीं चला कब लाइन क्लीयर हुई, सिगनल गिरा और गाड़ी आ गई···वह तब चौंका जब उसने प्लेटफार्म पर दाखिल हुए इंजन की धड़धड़ाहट सुनी और फिर वह आँखें फाड़-फाड़कर हर डिब्बे को देखने लगा। आखिरी डिब्बे में अचानक उसे फूलवती की छोटी बहन दिखाई दे गई···

शेष पृष्ठ ३९ पर


सिलबिल
पिलपिल
पॉप ग्रुप
क्या बात से ?
हिल स्टेशन जाने लायक पैसे नहीं हैं म्हारे पास । हिल स्टेशन ड्राई होने के कारण शराब ब्लैक में बोत महंगी मिलती है ।
भाई जी, गर्मी बड़ी सख्त पड़ने लगो है।इस साल हम किसी हिल स्टेशन पा नहीं जायेंगे क्या ? हिल स्टेशन वाले उस्तरा लेकर म्हारी बाट जोह रहे होंगे ।
आप दोनों के घबराने की बात नहीं है, मैंने ऐसी स्कीम निकाली है कि बगैर पैसा खर्चे हम हिल स्टेशन जा सकते हैं । उल्टे वहां से हम आयेंगे तो जेब में कमाई का पैसा होगा ।
म्हारे लिये जेब कतरा बनने की स्कीम तो नहीं निकाली है तूने ।
नहीं ! बहुत सीरियस बात है । हिल स्टेशनों पर बड़े होटल होते हैं। उन होटलों में सीजन आर्केस्ट्रा की सख्त जरूरत होती है । हम तीनों मिल कर एक पॉप ग्रुप बना सकते हैं। हमारी सर्दियों में ही गर्मियों के लिये बुकिंग हो जाया करेगी । ढेर सारा पैसा मिलेगा । हिल स्टेशन की सैर हो जायेगी । थारे लिये आर्केस्ट्रा बजाना मुश्किल काम नहीं होगा क्योंकि गाल बजाना तो थमको बचपन से ही आता है ।
ऐह !
थोड़ी सी प्रैक्टिस चाहिये बस ! थमने जासूसी दो दिन में सीख ली थी । आर्केस्ट्रा बजाना तो एक दिन में ही आ जायेगा ।
लेकिन चूहे, प्रैक्टिस के लिये इन्सट्रूमैंट चाहिये । ड्रम चाहिये, गिटार चाहिये, ओबो चाहिये, सेलो चाहिये, बिगुल चाहिये यह तो बोत महंगे आते हैं ।
उसका भी हल है ।
हम प्रैक्टिस बनस्पति घी के खाली कनस्तर और डिब्बों और टीन पर कर लेंगे । नौशाद साहब ने कहा भी है कि पॉप म्यूजिक क्या है ? टीन कनस्तर बजा-बजा कर गला फाड़ कर चिल्लाना ! मैं अभी जाकर टीन और कनस्तर लाता हूं । शुभ काम में देरी नहीं होनी चाहिये ।


शाबाश ! मैं रिकार्ड प्लेयर पर श्रोसीबीसा का फायर डांसर श्रौर फिर सोल मकोसा बजाऊंगा । तू ड्रम के ताल पर कनस्तर बजा, कुछ देर में लय-ताल पकड़ना श्रा जायेगा ।
प्रैक्टिस शुरू हो जाती है श्रौर पलक झपकते समय बीत जाता है । दुनिया बदल जाती है श्रौर दृश्य बदल जाते हैं···
और एक दिन हम क्या देखते हैं···
जी हाँ, भाइयों श्रौर बहनों, मेरा मतलब लेडीज एण्ड जैन्टल मैन, श्रब श्राप जरा श्रपना दिल थाम लीजिये । देखिये ग्रामीन मयानी श्राज श्रापके लिये क्या लेकर श्राया है । लाखों दिलों की धड़कन, वर्ल्ड फेमस ड्रमर सिलवर बिल । हर महीने जिनके ड्रम के करोड़ों रिकार्ड दुनिया में बिकते हैं । जो श्राज पॉप संगीत की दुनिया में चोटी पर हैं। करोड़ों लड़कियाँ जिन पर फिदा हैं, जिनके होटल के बाहर लड़कियों की भीड़ तितर-बितर करने के लिये पुलिस को मशीन गन का सहारा लेना पड़ना है···जी हाँ, भाइयों श्रौर एक बात बता दूं श्रापको···
शायद श्रापको पता न हो । सिलवर बिल श्रपने ही हिन्दुस्तान में पैदा हुए थे श्रौर श्रपना बचपन इन्होंने यहीं गुजारा था । पिछली बार जब इन्होंने फ्लोरीज में श्रपना शो दिया था तो चार सौ लड़कियाँ बेहोश हो गयी थीं···हाँ···तो बाकी बातें बाद में होंगी भाइयों पहले जरा···हाँ···
मैं श्रब श्रौर श्रापको नहीं तरसाऊंगा । लीजिये पेश हैं वर्ल्ड फेमस ड्रमर मिस्टर सिलवर बिल 'दि किंग श्रॉफ ड्रम बीटिंग···टोस्ट श्रॉफ दि वर्ल्ड···श्राइये-श्राइये मिस्टर बिल···



हाय मैं मर जाऊं
तालियों की गड़गड़ाहट
EEEEKS
वेलकम
सीटी
कितना स्मार्ट है
हाऊ क्यूऽऽट
स्वीट डार्लिंग
KISS
ओह गाड !
आदाब अर्ज. नामस्टाय है ! आडाबर्ज हाय ! थैंक यू—थैंक यू !
ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स, अमको बोन मारी के साथ आपको बोलना मांगटा हाय कि हमारे पास टायम का बोत कमी हाय । हम इस शो के वास्ते ५/११ सेंकड से ज्यादा नहीं देने को सकता । आई एम वेरी बिजी । आमारा आने वाला पचास साल का मारा टायम बुक हो गया हाय । फिफ्टी इयर्स—यस फुल फिफ्टी इयर्स । अभी यहाँ से जाने अमको प्रेजीडेंट कार्टर से बात करना हाय । मस इम्पोर्टेन्ट मैटर्स । इंडिया के पार्लियामेंट में भी हमारा स्पीच है । अब आप लोग थिंक करो एक अकेला हम किस-किस प्लेस पर जायेगा ? वर्ल्ड फेमस होने का बोत प्राइम देना पड़ता है । अब हम अपना ड्रम बीट सुनाता है ।



पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे ग्रगले ग्रंक में पढ़िये ।

हो हो हो

● मैं क्यों बना……

डाक्टर—बेकारी दूर करने का यही इलाज था।

लेखक—किस्मत में यही लिखा था।

मैं क्यों न बना…

कुम्हार—अपने सपने मिट्टी में नहीं मिलाना चाहता था।

योगी—मैं अपने पैरों पर ही खड़ा होना चाहता था (सिर पर नहीं)।

● काफी साल बेकार रहने के बाद सुरेश ने बताया कि रेलवे में उसकी कोल ट्रांसफर इन्जीनियर की नौकरी लग गयी है। सुरेश का मित्र रमेश हैरान रह गया कि हायर सैकण्ड्री पास सुरेश को ऐसी टैक्नीकल नौकरी कैसे मिल गयी। रमेश ने एक दिन स्वयं काम पर जाकर देखा तो पाया कि सुरेश रेलवे इंजन में कोयले झोंकने का काम कर रहा था।

● दो विदेशी दिल्ली आये उन्होंने चाँदनी चौक में हलवाई को जलेबियाँ बनाते देखा और पूछा कि वह क्या बना रहा है। हलवाई अंग्रेजी बहुत थोड़ी जानता था लेकिन उसने उत्तर दे ही दिया, 'दिस राऊंड राऊंड राऊंड एंड स्टॉप।'

विदेशियों को दोने में दही जमी दिखाई दी और पूछा, 'वह क्या है?' हलवाई कुछ देर सोचकर बोला, 'दिस मिल्क स्लीपिंग इन नाइट एंड मार्निंग इट इज टाइट।'

● एक अपराधी को कैद की सजा हुयी। जेल गया तो उसे अपने बालों में एक पिस्सू मिला। उसने पिस्सू को ट्रेनिंग देने की सोची! पहले उसे इशारे पर कूदना सिखाया। इसके बाद उसने वर्षों की मेहनत से पिस्सू को कई आश्चर्य जनक करतब सिखाये।

जब वह रिहा हुआ तो पिस्सू को लेकर सीधे सर्कस मैनेजर के पास गया और जेब से पिस्सू निकाल मेज पर रखा और बोला, 'जरा इसे देखिए…।'

मैनेजर ने देखा! ऐशट्रे उठाया और उससे पिस्सू को मसल दिया और बोला, 'बड़ा गन्दा जानवर है यह पिस्सू! क्यों?'

● चुनाव का समय था। एक पार्टी अपने-अपने विभिन्न चुनाव क्षेत्रों के लिए पोस्टरों के पार्सल भेज रही थी। एक ऐसा ही चुनाव पोस्टरों का पार्सल लेकर कार्यकर्ता डाकघर गया। पार्सल काऊंटर के क्लर्क ने उससे पूछा, 'क्यों साहब इसमें टूटने वाली चीज तो नहीं है?'

कार्यकर्त्ता, 'हाँ है। चुनाव के वायदे हैं।'

● एक आदमी अपनी लड़की के कमरे में गया तो देखा कि वह पाँच छः टेबल फैन एक साथ चलाये बैठी है। वह बोला, 'बेटी



तुम बहुत फिजूल खर्च कर रही हो।' लड़की ने कहा, 'नहीं डैडी, आप चिन्ता न करें यह अपने पंखे थोड़े ही हैं! सब सहेलियों से मांग लाई हूं।'

● मोर्चे पर तैनात एक फौजी को बीबी का भेजा पार्सल मिला। पत्र भी मिला जिसमें लिखा था, 'मैं ऊनी जैकट भेज रही हूं! डाकखर्च कम करने के लिये मैंने जैकट से बटन निकाल लिये हैं।' पत्र के नीचे एक नोट था, 'बटन जैकट की दायीं जेब में हैं।'

● एक व्यक्ति, 'मास्टरनी से शादी करने का यही नुकसान है।' दूसरा, 'क्या?'

पहला, 'जब भी मैं उसे पत्र लिखता हूं वह जवाबी पत्र में मेरे पत्र की व्याकरण की गलतियों का ब्यौरा लिखती है।'

● एक सत्संग में आचार्य जी बोले, 'भाईयों, आज का प्रवचन का विषय गीता का बीसवां अध्याय है जिसमें झूठ बोलने वालों के सम्बन्ध में उपदेश हैं। आप में से किस-किस ने यह अध्याय पढ़ा है?'

कई लोगों ने हाथ उठाये।

आचार्य बोले, 'मुझे आप ही लोगों को आज उपदेश देना है: गीता में बीसवां अध्याय है ही नहीं।'

● एक पार्टी में एक व्यक्ति का एक युवती से परिचय हुआ। कुछ बातों के बाद युवती ने पूछा, 'वह कोने में बैठा मनहूस-सा आदमी कौन है?'

वह व्यक्ति सकपका कर बोला, 'वह तो मेरा भाई है।'

युवती भी सटपटा गयी और बोली, 'ओह मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि आप दोनों कितने मिलते जुलते हैं।'

● एक फिल्म का प्रेस शो हुआ। शो खत्म होने के बाद निर्माता ने मशहूर आलोचक से पूछा, 'कैसी लगी आपको पिक्चर?'

आलोचक—'तरो-ताजा करने वाली है आपकी फिल्म।'

निर्माता—'सच?'

आलोचक—'बिल्कुल! पूरे पिक्चर भर मैं सोता रहा! अब उठने पर बिल्कुल तरो ताजा महसूस कर रहा हूं।'

● एक फिल्म स्टार बनने की इच्छुक युवती फिल्म प्रोड्यूसर के पास गई और रोल मांगा!

प्रोड्यूसर बोला, 'आप अपना टेलीफोन नम्बर दे दीजिए? आपको दादी के रोल के लिए मैं बुला लूंगा।'

युवती—'दादी?' लेकिन मैं तो जवान हूं।'

प्रोड्यूसर—'जब तक मैं टेलीफोन करूंगा आप बूढ़ी हो चुकी होंगी।'


मोटू-पतलू
यह देखिये, पिछले दिनों क्या गड़बड़ हुई । घसीटाराम एक आदमी का अटैची केस लेकर भागा...
तो अटैचीकेस समेत
एक गटर में जा गिरा ।
गटर की गन्दगी में अटैचीकेस एक तालाब में पहुंचा, वहाँ गन्दगी की खाद बनी ।
खाद एक क्रेन से उठाकर ट्रक में लादी गई ।
ट्रक ने खाद घसीटाराम के मकान के सामने वाले पार्क में डाल दी ।
खाद से निकले अटैचीकेस को लोगों ने पहचान लिया कि उन्होंने उसे घसीटाराम के पास देखा था । लोगों ने अटैचीकेस घसीटाराम के मकान की खिड़की पर रख दिया ।
दूसरी ओर बच्चे उठानेवाले गैंग का साथ देने के अपराध में घसीटा राम पुलिस स्टेशन पहुंच गया था। वहां गैंग ने यह स्वीकार कर लिया कि घसीटा राम बेकसूर है। उसे यह कह कर ब्लैकमेल किया गया था कि उसने गैंग का साथ न दिया तो पुलिस को बता दिया जायगा कि अटैचीकेस में क्या था। इस बात पर पुलिस घसीटा राम को बच्चे उठाने के अपराध से मुक्त करने पर राज़ी हो गई है,........ पर एक प्रश्न अभी अधूरा है!
उस अटैचीकेस में क्या था ?
उसमें आपकी इज्जत थी, और मेरी बेइज्जती थी ।
WANTED
मतलब ?
मतलब है बात ढकी रहे तो आपकी इज्जत है । खुल जाए तो मेरी बेइज्जती ।



मतलब है, मैं कहूं कि अटैचीकेस में कोई खास चीज नहीं थी, पुलिस वालों की बेइज्जती होगी कि इतनी छानबीन पर पता भी लगाया तो क्या खाक पता लगाया ।
बको मत । हम पूछ रहे हैं, अटैचीकेस में क्या था ?
कुछ नहीं था जी । खेल का खेल था । तमाशे का तमाशा था । ठंडी आहें थीं । गर्म आंसू थे । चांद की चांदनी थी, हवा का झोंका था । बिजली का झटका था । जनता पार्टी का लटका था ।
हेरा फेरी कर रहे हो । कसम खाकर साफ साफ बता दो क्या था ?
आपके बच्चों को खाकर...मतलब है आपके बाल बच्चों की कसम खाकर कह रहा हूं । उसमें अमिताभ का बचपन था । जया की बहादुरी थी । धर्मेन्द्र का धर्म था । हेमा की मटर थी, शर्मिला की शर्म थी । दीवाना की दिवानगी थी ।
यूं कहो ना सीधी तरह से उसमें दीवाना की फाईल थी ।
हां जी दीवाना की फाईल थी ।
जिसमें धर्मेन्द्र, हेमामालिनी और शर्मिला टैगोर की तस्वीरें छपी थीं ।
हां जी छपी थीं ।
यूं कहो ना साफ-साफ, बात क्लीयर हो गई । इतना घुमा फिराकर बात बनाने की क्या जरूरत थी । जाओ अपने घर आगे से किसी हेरा फेरी में पड़ने की कोशिश मत करना ।
जान बची और लाखों पाए, लौट घसीटा घर को आए । कितने बड़े चक्कर ने मुझे घनचक्कर बना दिया था ।
भगवान अपने गधों को हलवा खिलाता है । मैंने पता नहीं उसकी ऐसी कौन-सी भैंस खोली है जो वह मेरी लुटिया डुबोने पर लगा रहता है ।


घर पहुंचा तो घसीटा राम अपनी खिड़की पर अटैचीकेस देखकर दंग रह गया ।
क्या मतलब है ? यह कैसा बक्स है ? मिट्टी में लिथड़ा हुआ है ।
सामने मजदूर जमीन खोद रहे हैं । उन्होंने धरती में से निकाला होगा । धरती में से गड़ा धन निकलने की कितनी कहानियां सुनी हैं । कितना भारी है । इसमें जरूर अशर्फियां होंगी ।
खज़ाने के लालच में घसीटाराम ने अटैचीकेस खोला तो उस की जान गले में अटकी की अटकी रह गई ।
अरे मैं मर गया ।
यह मुर्दा फिर मेरे सर आ पड़ा । अटैचीकेस गटर में गिरा था । यहां कैसे आ गया ? अरे मेरा घर गटर के अन्दर बना हुआ है क्या ?
मेरे प्राण मेरा जिस्म छोड़ देंगे पर लगता है यह लाश मेरा पीछा नहीं छोड़ेगी । कोई पिछले जन्म का बैर है क्या इसे मुझसे । हे भगवान ! मुझ पर आसमान गिरा दे. या धरती फाड़ दे ताकि मैं उसमें समा जाऊँ । मुझ बदनसीब को तो मौत ही आ जाए तो अच्छा है ।
क्या बात है ? रो क्यों रहे हो ? क्या तुमने मुझे बुलाया है ?
मौत को बुलाया, तो मौत आ गई !
हां मैंने तुम्हें बुलाया था माई डीयर मौत ! मैं यह पूछना चाहता था कि तुम्हारी घड़ी में क्या बजा है ?


मैं तो यहां बाग में काम करने वाली मजदूर हूं। हम गरीबों के पास घड़ी कहां से आई। पुलिस इंस्पेक्टर के पास घड़ी है। उसे बुलाऊं।
नहीं, नहीं। उसे मत बुलाओ। तुम्हारे पास घड़ी नहीं है तो मैं तुम्हें घण्टाघर दे दूंगा। पर पुलिस इंस्पेक्टर को यहां से दूर ही रखो।
तभी वहां एक और आदमी ने आकर घसीटाराम को और चक्कर में डाल दिया।
अरे तुम तो वही हो, जो मेरा अटैचीकेस लेकर भाग गये थे। और यह वही अटैचीकेस है।
ऐसा बेईमान भी मैंने दुनिया में कोई नहीं देखा। मैंने कहा मैं अपना दूसरा सामान उठा लाऊं, तुम जरा मेरा अटैचीकेस देखते रहना और तुम अटैचीकेस लेकर ही भाग लिये।
पता है इस अटैचीकेस में कितनी क़ीमती चीज़ है? तुमने तो मेरी जान ही निकाल दी थी।
इसके अन्दर जो कीमती चीज है, उसने मेरी जान निकालने में ही कौन सी कसर छोड़ी है।
तुम ले जाओ इसे और मेरी जान छोड़ो।
अपनी फिल्म जनता जमादार में छुरे से मरने का सीन लेने के लिए राजेश खन्ना की डमी बनवाई थी। इसे तुम ले उड़े।


राजेश खन्ना की डमी।
प्लास्टिक की डमी। तुम क्या इसे असली मुर्दा समझे थे? असली हो तो गल-सड़ कर इसमें बदबू न आ जाती।
बदबू तो अब भी आ रही है।
यह गली सड़ी खाद की बदबू है।
राजेश खन्ना की बदबू नहीं है? मुझे और चक्कर में मत डालो और इस मुसीबत को डिम्पल कपाड़िया के पास पहुंचा दो।
पहुंचाना ही पड़ेगा। अटैची का सत्यानाश हो गया है। इसे तुम अपने पास ही रखो। राजेश खन्ना फिल्म के सीन में अपनी छाती पर विलेन से छुरा खाने को तैयार नहीं था। इसलिये प्लास्टिक की यह डमी बनवाई थी।
इसकी छाती पर छुरा मारो और मेरे सर पर जूते मारो। पर इस मुसीबत को ले जाओ यहाँ से।
खट खट
खट खट
फिर आ रहा है क्या पलट कर?
मैं इस अटैचीकेस में छुप जाऊंगा तो अब उसके बाप को भी नहीं मिलूंगा।
तभी वहां मोटू-पतलू चेलाराम और डाक्टर झटका आ गये।
कहां गया घसीटाराम? जान बचने की खुशी में इसे बधाई दे दो।



 अगले सप्ताह इन से फिर मिलिये, एक नई कहानी में


सवाल यह है
कि आज जनता पार्टी के मंत्रियों के नाम की क्या कीमत है ?
एक नौकरी के लिये इन्टरव्यू देने वालों की लाइन में खड़े इस नौजवान से पूछिये ।
←इंटरव्यू
तुम यूं ही जूते घिसते हुए यहां तक आये हो और लाइन में खड़े होकर अपना तेल निकलवा रहे हो ।
यह नौकरी मुझे मिलेगी, यह तय हो चुका है । इन्टरव्यू तो केवल दिखावा है, और मैं केवल एक प्रथा निभाने के लिये लाइन में खड़ा हूं, वरना जब मेरा नम्बर आयेगा तो इन्टरव्यू लेने वाले मेरे कदमों पर झुके होंगे ।
मुझे कैम्पा कोला पिलायेंगे, बीयर पीने का आग्रह करेंगे । मेरे भाग्य पर अश-अश करेंगे ।
मुझे अपने बंगले पर डिनर देंगे ।
डिनर में यह प्रस्ताव रखेंगे कि मैं उनकी लड़की से अपना रिश्ता स्वीकार कर लूं ।

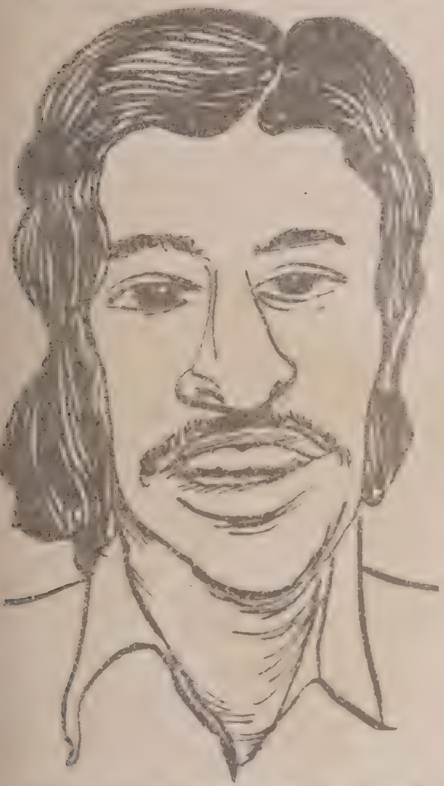


अगले सप्ताह इसी पृष्ठ पर देखिये, एक और लाजवाब सवाल।

खेल खेल में

सुरेन्द्र खन्ना

दिल्ली की ओर से खेलने वाले विकेट-कीपर बैटसमैन २३ वर्षीय सुरेन्द्र खन्ना ने हाल में सम्पन्न हुए रणजी व दुलीप हाकी



मैचों में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है। रणजी सेमीफाइनल में बम्बई के विरुद्ध और दुलीप ट्राफी फाइनल में पश्चिमी क्षेत्र के विरुद्ध दिल्ली में बैटिंग में आकर्षक स्कोर बनाये। रणजी फाइनल में कर्नाटक के विरुद्ध बंगलौर में दोनों पारियों में शतक बनाकर नाम कमाया। रणजी ट्राफी फाइनल के इतिहास में केवल तीन और व्यक्ति यह कारनामा कर पाये हैं, मुश्ताक अली, विजय हजारे तथा हनुमंत सिंह।

कई बार वह ऐसे समय बैटिंग करने आये जब अपनी टीम की स्थिति बहुत खराब थी परन्तु उन्होंने अपनी शानदार बैटिंग से पासा पलट दिया। खन्ना ने केवल दो सीजन पहले ही रणजी मैचों में प्रवेश किया था। बैटिंग के अतिरिक्त इनकी विकेट कीपिंग भी उच्चस्तर की है।

सुरेन्द्र खन्ना फूड कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया में सेवारत हैं। युवा सुरेन्द्र खन्ना के रूप में हमें ऐसा लगता है कि भारत को एक नया भावी टैस्ट स्टार मिला है।

बंगलौर रणजी फाइनल में एक समय दिल्ली का स्कोर पांच विकेट पर कुल ४६ था। इस स्थिति को मोहिन्दर अमरनाथ तथा सुरेन्द्र खन्ना ने इस खूबी से सम्भाल लिया कि अन्त में दिल्ली आठ विकेट पर ४१६ का, विशाल स्कोर करके पारी समाप्त की घोषणा करने लायक हो गया।

विश्व क्रिकेट कप

भारत का दूसरा मैच

पिछले सप्ताह आपने पढ़ा कि किस तरह पहले मैच में इंगलैंड ने भारत की दुर्गती बनाई। भारत का दूसरा मैच अपने पुल में पूर्वी अफ्रीका से हुआ। पू. अफ्रीका विश्व के सबसे कमजोर टीमों में से थी। अतः भारत को यह मैच जीतने में कोई कठिनाई नहीं हुयी। पूर्वी अफ्रीका के बल्लेबाजों को भारत ने केवल ५४ ओवरों में मात्र १२० रन पर आऊट कर दिया और जवाब में भारत ने बिना-विकेट खोये ३० ओवरों में ही १२० रनों की संख्या पार कर ली।

भारत यह रन और भी शीघ्र बना सकता था परन्तु भारत के ओपनर इंजीनियर अस्वस्थ थे। उनकी पेशियों में खिंचाव के कारण वे दौड़ नहीं पा रहे थे। गावस्कर और इंजीनियर ने चल कर रन बनाये जहां दो या तीन रन बनते वहां एक ही बन पाया। फिर दोनों ने फैसला किया कि चल कर रन बनाने की जहमत भी न उठाई जाये। केवल चौकों की सहायता से रन बनने लगे। गावस्कर ने दस चौके मारे और इंजीनियर ने छः।

अशोक चावला, सन्त लाल कपूर व बलबीर पाल सिंह—पानीपत

प्र० कृपया विश्व की इन क्रिकेट टीमों को क्रम दीजिए।

आस्ट्रेलिया, भारत, इंगलेंड, पाकिस्तान, श्री लंका, न्युजीलेंड, व वेस्टइंडीज

उ० वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया, पकिस्तान, इंग्लेंड, भारत, न्यूजीलेंड तथा श्रीलंका।

बलीराम धर्मानी—रायपुर (म. प्र.)

प्र० : विश्व में सबसे अच्छा बल्लेबाज और बौलर कौन है ? और किस देश के ?

उ० : इस समय सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज वेस्टइंडीज के विवियन रिचर्डस तथा बौलर आस्ट्रेलिया के थामसन हैं। उनकी गेंद की गति १४७.८३ कि० मी० प्रति घंटे तक मापी गयी है।

कुलवन्त सिंह—वाराणसी

प्र० : क्या भारत रेड्डी विकेट कीपर किरमानी के घायल होने पर विकेट कीपिंग कर सकते हैं। यदि नहीं तो क्यों ? अगर हाँ तो किरमानी के जगह विश्वनाथ, वेंगसरकर आदि क्यों करते हैं ? भारत रेड्डी क्यों नहीं ? जबकि भारत रेड्डी का स्थान हर दौरे में निश्चित है।

उ० : अब तो किरमानी की जगह दिल्ली के सुरेन्द्रखन्ना आ गये हैं। लेकिन आपके सवाल का अपना अलग महत्त्व है। एक मैच शुरू होने के बाद अगर रिजर्व विकेटकीपर घोषित ग्यारह खिलाड़ियों में से है तो विकेट कीपिंग कर सकता है वरना नहीं। रिजर्व विकेट-कीपर इसलिये साथ रखा जाता है जैसे मान लीजिए किरमानी को चोट आती है या बीमार हो जाते हैं टैस्टमैच शुरू होने से पहले ही तो उस हालत में टीम रिजर्व विकेटकीपर को लेकर खेलेगी लेकिन अगर टीम घोषित करने व खेल शुरू होने के बाद किरमानी अस्वस्थ हो जाते हैं तो चुने हुए ग्यारह खिलाड़ियों में से ही किसी को विकेट कीपिंग करनी पड़ेगी। विश्वनाथ, वेंगसरकर वगैरह को विकेट कीपिंग इसीलिए करनी पडी चूंकि किरमानी मैच शुरू होने के बाद अस्वस्थ हुये थे। अगर मैच से पहले टीम की घोषणा के पूर्व ही बीमार होते तो उनकी जगह भारत रेड्डी खेलते। उस मैच की टीम से किरमानी को ड्राप किया जाता। किसी फील्डर को चोट लगने पर जो सब्स्टीच्यूट खिलाड़ी आता है वह भी क्लोज इन में फील्डिंग नहीं कर सकता। विकेट कीपिंग तो फिर क्लोज इन का ही काम है।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

जूडो कैराटे कैसे सीखें

'चलती ट्रेन में कुछ बदमाशों ने छुरे दिखा कर यात्रियों का सामान तथा रुपये पैसे, घड़ियां व अंगूठियां छीन लीं और जंजीर खींच कर भाग खड़े हुए।'

'कल रात लेडी हार्डिंग रोड पर चार गुण्डों ने एक व्यक्ति को छुरा मार दिया और उसके रुपये-पैसे छीन कर फरार हो गए।'

'एक गुण्डे ने सुनसान सड़क पर जा रही युवती के गले का सोने का लाकेट तथा पर्स झपट लिया।'

'कुछ बदमाशों ने अचानक लाठियों से एक राह चलते व्यक्ति पर हमला कर दिया अस्पताल ले जाते हुए रास्ते में उसने दम तोड़ दिया। हमले का कारण आपसी रंजिश बतायी जाती है।'

अखबारों के पृष्ठ प्रायः इस तरह की घटनाओं से भरे रहते हैं। गुण्डागर्दी और लूट-पाट की वारदातें तो अब इतनी बढ़ गई हैं कि अपनी रक्षा करना भी मुश्किल हो गया है।

लूट-पाट, मार-पीट और छुरेबाजी की जो घटनायें हम अखबारों में आए दिन पढ़ते रहते हैं—ईश्वर न करे किसी दिन हमारे साथ भी ऐसा कुछ घट सकता है। इसीलिए अब यह आवश्यक हो गया है कि हम अपनी आत्मरक्षा के लिए कुछ न कुछ उपाय करें। कारण—हमारी सुरक्षा का प्रबन्ध पुलिस चाहे जितना अच्छा कर ले—फिर भी हम पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो सकते क्योंकि यह जरूरी नहीं है कि जिन सुनसान जगहों, गली-कूचों आदि में हम पर अचानक हमला हो जाए तो पुलिस वहां मोजूद ही हो!

यह समस्या तो तभी सुलझ सकती है जब हम स्वयं अपनी रक्षा करने के योग्य बन जायें। इसका मतलब यह नहीं है कि आप सैनिकों जैसी शस्त्रों की ट्रेनिंग लें और हमेशा अपने पास पिस्तौल-बन्दूक या लाठी-छुरा रखें। न आप सैनिकों जैसी ट्रेनिंग ही ले सकते हैं और न हमेशा अपने पास लाठी, पिस्तौल या छुरा ही रख सकते हैं—बल्कि आत्मरक्षा की बजाय खुद ही घातक हथियार रखने के जुर्म में फंस भी सकते हैं।

हमारा उद्देश्य आपको आत्मरक्षा की ऐसी कला सिखाना है जिसमें हथियारों की जरूरत नहीं पड़ती और साथ ही इन घातक हथियारों के हमले से बचा भी जा सकता है। आप अकेले ही तीन-तीन, चार-चार हमलावरों से एक साथ भिड़ भी सकते हैं और उन्हें नाकों चने चबवा सकते हैं।

कैराटे और जूडो दोनों ही आत्मरक्षा की ऐसी कलायें हैं जो आपके अनमोल जीवन की रक्षा विश्वास और दृढ़ता के साथ कर सकती हैं, बशर्ते आप इन कलाओं की नस-नस से परिचित हो जायें!

कैराटे और जूडो—

कैराटे एक जापानी खेल है। जापान का यह प्रसिद्ध खेल हजारों वर्ष पुराना है। अब तो यह खेल संसार के अन्य देशों में भी लोकप्रिय हो गया है। जापान में इसकी प्रतियोगितायें समय-समय पर होती रहती हैं तथा विशेष उत्सवों पर भी इसका प्रदर्शन मनोरंजन की दृष्टि से किया जाता है।



कैराटे शब्द का अर्थ है 'निहत्था' या 'खाली हाथ'। क्योंकि यह खेल बिना किसी हथियार को लिए हाथ से खेला जाता है—इसी कारण इसका नाम कैराटे पड़ा।

कुश्ती तथा कैराटे में बहुत फर्क है। कुश्ती का खेल दांव-पेच के साथ-साथ शारीरिक शक्ति पर बहुत हद तक निर्भर होता है। कुश्ती के लिए शरीर की मांस-पेशियों को मजबूत बनाया जाता है लेकिन कैराटे में दक्ष होने के लिए शारीरिक बल की जरूरत नहीं पड़ती। इसके लिए शरीर इकहरा होना चाहिए तथा चुस्त व फुर्तीला होना चाहिए। भारी शरीर के व्यक्ति को कैराटे खेल सीखने में कठिनाई होगी तथा वे इस खेल में उतने निपुण नहीं हो सकते जितना एक हल्के शरीर वाला व्यक्ति हो सकता है।

कैराटे में इस बात का ज्ञान कराया जाता है कि मनुष्य के शरीर के कौन-कौन से अंग कोमल व कमजोर होते हैं तथा वहां किस प्रकार की चोट की जाए जिससे वह काबू में आ जाए। कैराटे खेल के जितने भी दांव-पेच हैं—उन सबका उपयोग शरीर के नाजुक और कमजोर अंगों पर ही किया जाता है।

कैराटे सीखने के लिए आपको पूरा शरीर मजबूत बनाने की जरूरत नहीं है। केवल हाथ और पैर के विभिन्न उपयोगी स्थलों को ही मजबूत बनाने की जरूरत पड़ती है। साथ ही शरीर फुर्तीला होना चाहिए। कैराटे में शारीरिक फुर्ती का बहुत ही महत्व है।

शरीर से दुबले-पतले या कमजोर व्यक्तियों के लिए तो कैराटे वरदान ही है। कैराटे या जूडो कला में निपुण दुबला-पतला आदमी भी भीमकाय शरीर वाले व्यक्तियों को भारी पड़ता है।

लड़कियों तथा स्त्रियों के लिए भी कैराटे और जूडो सीखना चाहिए। इस कला को वे आसानी से बिना कठोर परिश्रम किए सीख सकती हैं। वर्तमान समय की इस बढ़ती हुई गुण्डागर्दी में वे अपनी सुरक्षा, विश्वास और दृढ़तापूर्वक कर सकती हैं।

कैराटे की तरह जूडो भी जापानी खेल है। इस खेल को अब संसार में ख्याति प्राप्त हो चुकी है। संसार की खेल-कूद की कई बड़ी सरकारी और निजी संस्थाओं द्वारा इसकी प्रतियोगितायें आयोजित की जाती हैं। संसार की सबसे बड़ी खेल-कूद प्रतियोगिता ओलम्पिक में भी जूडो खेल को स्थान प्राप्त है। जूडो कैराटे से ज्यादा भिन्न नहीं है। हां, चूंकि यह एक प्रतिष्ठित खेल के रूप में विख्यात हो चुका है और इसकी प्रतियोगितायें प्रायः होती रहती हैं—इसलिए खेल के कुछ नियम भी बना दिए गए हैं जिनकी परिधि में रह कर प्रतियोगी एक दूसरे को मात देने की कोशिश करते हैं।

क्रमशः

क्यों और कैसे

प्र० : धरती पर जीव धारियों की उत्पत्ति कब और कैसे हुई ?

उत्तम शाकमा—नेपाल

उ० : जीव धारियों के शारीरिक विकास की खोज करके उत्पत्ति के बारे में एक सिद्धांत बनाया गया है। बहुत से वैज्ञानिक तो इस सिद्धान्त से सहमत हैं परन्तु बहुत से लोग इस सिद्धान्त को धर्म ग्रन्थों के विपरीत समझते हैं।

उत्पत्ति का सिद्धान्त है कि संसार के सब जीवधारी पशु, पक्षी, पेड़, पौधे प्राकृतिक रूप से ही अपने बहुत सरलरूप से उन्नत हुए हैं। सरल रूप भी जीव धारियों को अपने पूर्वजों के रूप से उन्नत होकर प्राप्त हुआ है, जो कि हजारों लाखों वर्ष पूर्व और भी सरल रूप में थे जो कि केवल अपने सरलतम रूप में एक नन्हे से जैली के समान प्रोटोपलास्म के रूप में ही पाया जाता था।

इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य शरीर भी अपने सरल रूप से ही उन्नत हुआ है। जैसे आज के एक सख्त खुर वाले घोड़े के पूर्वज एक पांच उंगलियों के पांव वाला पशु समझा जाता है।

क्रमविकास के इस सिद्धान्त को वैज्ञानिक तीन मुख्य बातों द्वारा प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं। इनमें सबसे पहली बात है हजारों वर्ष पूर्व के मनुष्य और अन्य जीव धारियों के जीवाशेषों की खोज तथा अध्ययन। ये जीवाशेष क्रम विकास के बारे में काफी जानकारी देते हैं। मनुष्य शरीर के जीवाशेष लगभग १,०००,००० वर्ष पुराने तक पाये जा चुके हैं। इसी प्रकार केंकड़े के समान जीव के जीवाशेष लगभग ५००,०००,००० वर्ष पूर्व तक के समझे जाते हैं। इन अवशेषों से पता चलता है कि मछलियाँ पानी में उभय चरों से पहले हुईं तथा उभय चर रेंगने वाले कीड़ों से पहले हुए तथा रेंगने वाले जीव पक्षियों से पहले हुये तथा इसी प्रकार उत्पत्ति क्रम से आगे बढ़ती गई। वैज्ञानिकों के अनुसार जीव प्राकृतिक रूप से ही एक रूप से दूसरा उन्नत रूप धारण कर बढ़ता गया है।

क्रम विकास का दूसरा चिन्ह भ्रूण विज्ञान यानी अण्डे में जीव के विकास का अध्ययन करने पर प्राप्त होता है। इस अध्ययन से पता चलता है कि अण्डे में सबसे पहले भ्रूण एक मछली के समान बढ़ता है फिर उभय चर के समान हो जाता है, इसके बाद इसका रूप रेंगने वाले जीव के समान होकर अन्त में पक्षी का रूप लेता है। पशुओं के अनजन्मे शिशु भी इसी क्रम से विकसित होकर जीवन के इतिहासिक क्रम को दोहराते हैं।

क्रम विकास का तीसरा चिन्ह जीवित पशुओं के शरीर के अध्ययन से प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए कछुए के पैरों की मांसपेशियां तथा हड्डियों की बनावट, व्हेल मछली के मीन पक्षों की बनावट, घोड़े के अगले पैरों तथा मछली के हाथों की बनावट में काफी समानता पाई जाती है इसी प्रकार मनुष्य के शरीर के भीतर अब भी कई ऐसे अंग पाये जाते हैं जिनका कोई प्रयोग इस शरीर में दिखाई नहीं देता। ये कहना गलत न होगा कि ये भी हमारे पूर्वजों के शरीर की देन हैं। इन सब चिन्हों के आधार पर ही क्रम विकास को प्रमाणित किया जाता है।

प्र० : भूमि में पेट्रोल कैसे बन जाता है तथा इसका पता कैसे लगाया जाता है ?

केवल प्रकाश—काशीपुर

उ० : संसार में पाये जाने वाले ईंधनों में पेट्रोल सबसे महत्त्वपूर्ण है। सबसे अधिक पेट्रोल अमरीका, रूस और वेनिनजुला देशों में निकाला जाता है। मध्यपूर्वीय देशों में भी तेल के बहुत बड़े भंडार हैं। यहाँ भी बड़ी मात्रा में तेल निकाला जाता है। खनिज तेल को साफ करके अपनी मोटर-गाड़ियाँ इत्यादि चलाने के लिए पेट्रोल या गेसोलीन प्राप्त होती है। डीजल उद्योगों तथा जहाजों में उर्जा के लिये जलाया जाता है, घर गर्म करने और जेट तथा रोकेट इंजन चलाने के लिए केरोसीन पेराफीन प्रयोग में लाया जाता है। तथा हर प्रकार के मशीनी तेल भी हमें खनिज तेल से ही प्राप्त होते हैं। ईंधनों के अतिरिक्त बहुत से पेट्रोकमिकल नामक रसायन भी हमें खनिज तेल से प्राप्त होते हैं।

पेट्रोलियम अधिकतर केवल तेल कहलाने वाला तत्त्व हाइड्रोकार्बन नामक कई तत्त्वों के मिश्रण से बना है ये हाइड्रोकार्बन, हाइड्रोजन तथा कारबन के कम्पाउंडस होते हैं। पेट्रोल हजारों वर्ष पूर्व समुद्रों में रहने वाले पशुओं तथा बनस्पतियों के जीवाशेषों से बना है। ये अवशेष सड़ गए तथा इनके ऊपर रेत और मिट्टी की तहों की तहें लगती गईं जो कालान्तर में चट्टानें बन गईं। गर्मी, दबाव तथा सड़ने के कारण अवशेष तेल की बूंदों तथा प्राकृतिक गैस में परिवर्तित हो गये। काफी मात्रा में ऐसे बना तेल तथा गैस छिद्रिल चट्टानों से पृथ्वी के बाहर निकल गये, परन्तु इसकी अधिक मात्रा बिना छिद्रिल चट्टानों के नीचे दबी रही।

धरती के नीचे दबे पेट्रोल का पता लगाना, एक बहुत ही कठिन तथा चतुराई का कार्य है। तेल की खोज करने वाले सीधे तेल को ही नही खोजते अपितु ऐसे स्थानों का पता लगाने का प्रयास करते हैं जहां तेल इकट्ठा होकर फंसा हुआ हो। इस खोज में भांति-भांति के यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है जैसे मेगनोमीटर तथा ग्रेवोटीमीटर, परन्तु सिसमोग्राफ इन सब यन्त्रों से अधिक महत्त्वपूर्ण है। तेल की खोज करने वाला यन्त्र धरती के नीचे एक विस्फोट आरम्भ करता है तथा सिसमोग्राफ द्वारा अलग-अलग दूरी के पृथ्वी के कम्पन को नापा जाता है, इससे पृथ्वी के नीचे की चट्टानों की गहराई तथा स्थिति का पता लग जाता है। जब तेल मिल जाता है तो इन चट्टानों में छेद करके तेल के कुऐं बना लिये जाते हैं और खनिज तेल पाइपों में पम्प करके बाहर निकाला जाता है। इस अवस्था में प्राप्त खनिज तेल फिर शोध शालाओं में ले जाया जाता है जहां इसे साफ करके भिन्न-भिन्न रूपों में बदला जाता है। इस शोध कार्य के दौरान ही खनिज तेल से अन्य रसायन तथा गैस भी प्राप्त होती है।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

क्या कहते हैं ये फिल्म स्टार?

जनता पार्टी सरकार के दो वर्ष के बारे में प्रसिद्ध फिल्म स्टारों के विचार पढ़िये और दाद दीजिये।



सुरेश सुषमा कांड के कारण अश्लील चित्रों को प्रोत्साहन मिला है। मैं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् से भी अधिक भौंडी फिल्म बनाने की योजना बना रहा हूं। यही जनता सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि है।



मुझे जनता सरकार के दो वर्षों में एक और फिल्म का मसाला मिला है। नसबंदी।



देश में अपराध बढ़ रहे हैं. इसे दिल्लगी नहीं समझना चाहिये। मारधाड़ वाली फिल्मों की मांग बढ़ जायेगी। साथ ही मेरी भी मांग बढ़ेगी।



अभी भी हमारे देश में ६०% लोग गरीबी की रेखा के नीचे हैं। उनके लिए कुछ नहीं किया गया है। घर चलाना मुश्किल हो गया है महंगाई के कारण।



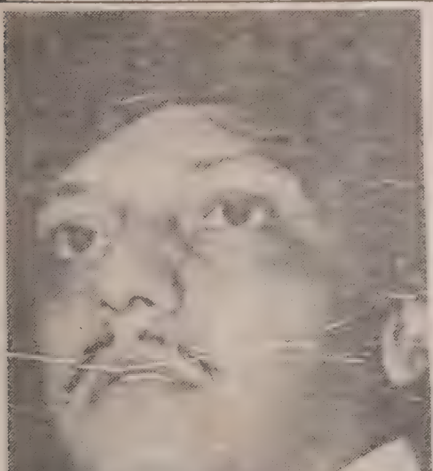
प्रोहीबीशन की वजह से लोगों ने समय काटने के लिए फिल्में अधिक देखना शुरू किया है यह फिल्म इन्डस्ट्री को इनकरेजमैंट है।



जनता राज की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि राजनारायण जनता में हास्य फिल्मों के लिए सही वातावरण तैयार करने में सफल रहे हैं।



मेरे लिए तो अनुभव अच्छा नहीं रहा। जनता पार्टी के नेताओं ने इतनी लम्बी-चौड़ी बातें की हैं कि कई लोग मुझे भी जनता पार्टी की लम्बी फूंक समझने की गलती कर बैठते हैं।



जनता सरकार ने आपस की छोटी-छोटी सी बातों में समय नष्ट कर दिया। खुद को लोगों का दामाद समझने लगे हैं। यह दो वर्ष खट्टे-मीठे अनुभव के रहे हैं।

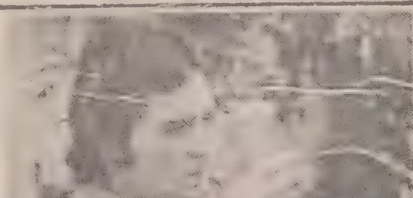


जनता राज में कई फिल्म स्टार पीलिया रोग के कारण बिस्तरों पर पड़े रहे इस प्रकार काम का बहुत नुकसान हुआ।

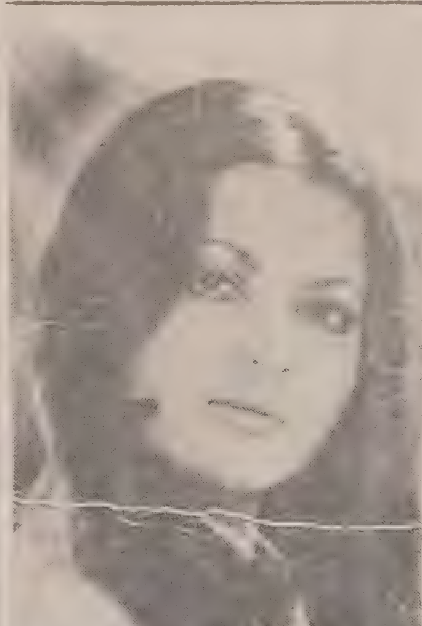
जनता पार्टी सरकार की कहानी मेरी और चिन्टू की कहानी की तरह रही है। पार्टी के विभिन्न घटक न तो विधिवत शादी कर एक होते हैं और न ही एक-दूसरे को छोड़ते हैं।



विदेशी मल्टीनेशनल कम्पनियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। देसी कम्पनियां पिट रही हैं। कबीर बेदी ने मुझे छोड़ एक अमरीकन से शादी कर ली है। यह ठीक नहीं है।



जनता सरकार की सारी योजनायें फ्लॉप हो रही हैं। कोई भी काम हिट साबित नहीं हुआ।



जनता सरकार अपने चुनाव में किये गये वादों को तलाक दे चुकी है।

जंगल का चुनावी दंगल

—डा. राम सिया सिंह

प्रजातंत्र की आंधी बहते-बहते, पशु-पक्षियों की दुनिया में पहुंच गई। चारों ओर आम-चुनाव का जोर था।

सभी पशु-पक्षी एक विशाल मैदान में इकट्ठे हुए। कछुवे ने कहा—'भाइयों, हमारे प्रदेश में यतायात के साधनों की कमी है। इसलिए सभी पर्टियों के उम्मीदवार इसी स्थल पर इकट्ठे होकर एक ही मंच से अपनी-अपनी बातें कहें। वे चाहें तो उनके समर्थक उनके पक्ष की बातें कह सकते हैं। हम पशु हैं, मनुष्य नहीं। हम लोग एक जगह बैठ कर एक दूसरे दल की बातों को सुन सकते हैं।"

सभी ने कछुवे की बात का समर्थन किया। तय हुआ कि यह चुनावी प्रचार सभा गर्दभराज बैसाखनन्दन की अध्यक्षता में हो क्योंकि वे बड़े धैर्य से सभा का संचालन कर सकते हैं।"

बैसाखनन्दन ने अध्यपक्ष का आसन ग्रहण कर आभार व्यक्त, करते हुए कहा—'भाइयों, आप लोगों ने इस मौके पर मुझे जो यह सम्मान दिया है मैं उसके लिये आपका और प्रजातंत्र की आँधी का बेहद शुक्र गुजार हूं। आपसे निवेदन है कि यदि कोई शरारती तत्व मुझ पर हमला कर बैठे तो आप लोग मुझे भागने के लिये रास्ता अवश्य ही छोड़कर बैठिये।'

सबसे पहले गर्दभराज ने भेड़िया पार्टी के समर्थक को मंच पर बुलाया। भेड़िया पार्टी के समर्थक खूंख्वारदास ने कहा—'भाइयों, आप लोग भेड़िया जी को ही वोट दीजिए! इनमें एक कुशल नेता के सभी गुण मौजूद हैं। ये बड़ी खूबी से रात में गांव में पहुंचकर भेड़-बकरी के बच्चे उठा लाते हैं। ये दिन में किसी को नाहक तंग नहीं करते। जब कभी इनके खिलाफ विधानमंडल में अविश्वास-प्रस्ताव आने वाला होगा, तो ये विरोधी विधायकों को चुराकर गुफा में तब तक के लिए बन्द कर दिया करेंगे, जब तक मतदान सम्पन्न न हो जाये। ये सचमुच के भेड़िया हैं, कोई भेड़िया आसान मनुष्य नहीं है। ये भेड़ों को भेड़िया का दर्जा दिलाने का पूरा प्रयत्न करेंगे।'

तालियों की गड़गड़ाहट।

अब गीदड़चन्द के समर्थक भागचन्द जी मंच पर पधारे—'भाइयों, आप लोग गीदड़ चन्द्र को ही अपना बहुमूल्य मत दीजिये। हमारे नेता गीदड़ चन्द्र एक मंजे-मंजाये तपे-तपाये नेता हैं। वे किसी भी खतरे के आने के पहले ही भाग निकलने में माहिर हैं। वे विरोधी पार्टियों में घुसकर तोड़-जोड़ का काम बड़ी खूबी से कर सकते हैं। यदि इनकी सभा में किसी मनचले श्रोता ने टूटे-फूटे जूते, चप्पल, टमाटर या सड़े अंडे, फेंके तो इन उपहारों के मंच तक पहुंचने के पहले ही ये बड़ी खूबी से चम्पत हो जाया करेंगे। आप के प्रिय नेता की आन-बान को कोई खतरा नहीं हो सकता। विधानमंडल में एक के बोलते ही सभी 'हुआ, हुआ' करने लगेंगे। इस प्रकार ध्वनिमत से ही सारे काम काज 'पूरा हुआ' समझिये।'

इतना सुनते ही सभा में उपस्थित सभी गीदड़ 'हुआ-हुआ' करने लगे। किसी प्रकार चीख-चिल्लाकर अध्यक्ष बैसाखनन्दन ने सभी को शान्त किया।

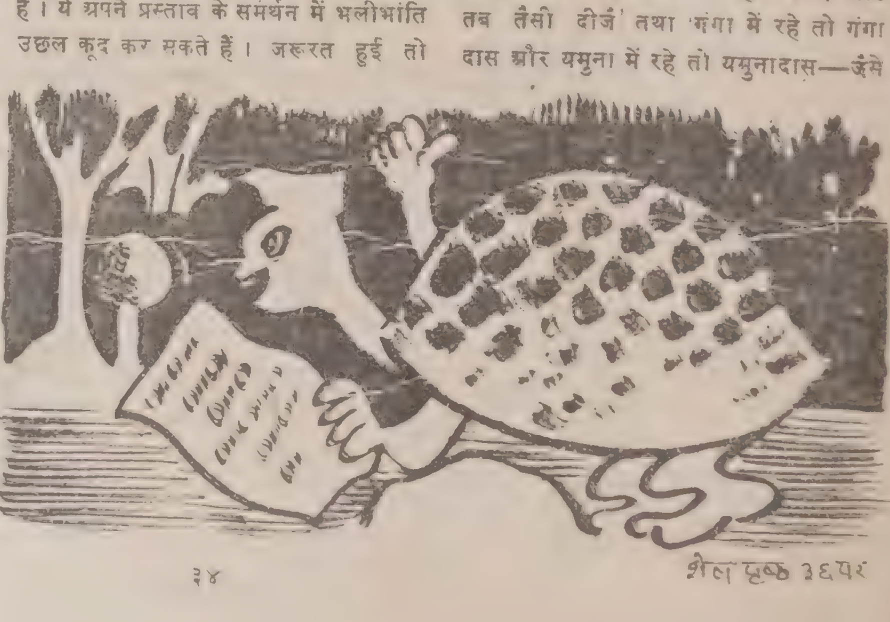
गीदड़ चन्द्र के बाद मंच पर मर्कटराज के समर्थक बन्दरानन्द पहुंचे—'भाइयों, आप लोगों को यह जानकर बेहद प्रसन्नता होगी कि हम और हमारे नेता मनुष्य के भी पूर्वज रहे हैं। मर्कटराज में एक कुशल नेता के सभी गुण व खूबी मौजूद हैं। ये विरोधी गुट वालों से झगड़ा करने में नम्बर एक के उस्ताद हैं। ये अपने प्रस्ताव के समर्थन में भलीभांति उछल कूद कर सकते हैं। जरूरत हुई तो विधानसभाध्यक्ष की कुर्सी तक भी क्षण भर में पहुंच सकते हैं। दफ्तर की फाइलों की गर्द झाड़ने के लिये इन्हें अलग से झाड़ू की जरूरत न पड़ेगी। ये पूंछ से ही ब्रुश का काम ले लिया करेंगे। दफ्तर में खर्राटे भरने वाले कर्मचारियों को जगाने के लिये ये उनकी नाक में पूंछ के बाल डाल दिया करेंगे। हमारी आप लोगों से विनती है कि आप इन्हें ही वोट दीजिए।'

हो जाती हो फेल जहाँ, शेरसिंह की पूंछ।
दिलवाती 'सक्सेस' वहीं, मर्कटपति की पूंछ॥

अन्त में बगुला भगत की बारी थी।

बगुला भगत के समर्थक स्वामी बकुलनाथ ने एक पैर से खड़े होकर कहा—'प्यारे मतदाताओं हमारे नेता बगुला भगतजी मछलियों के जीर्णोद्धार के लिये किस खूबी से घंटों एक पैर से खड़े-खड़े ध्यान मग्न रहते हैं यह आप सभी को भलीभांति विदित है। ये विरोधी दलों के सामने पहुँचकर बिलकुल भगत बन जायेंगे और उनके विधायकों को पकड़-पकड़, मौका देखकर उनका शिकार करते रहेंगे। ये भक्ति और वैराग के उपदेश से जनता का खजाना भर देंगे। मेरी राय में इनके जैसा ज्ञानी और ध्यानी संत मिलना कठिन है। आप लोग इन्हें ही अपना वोट देकर अपना जीवन सफल बनाइये।'

तब गिरगिटानन्द के समर्थक दलबदलूराम उठ खड़े हुए। उन्होंने अपना रंग बदलते हुए कहा—'साथियों, आप लोग जानते हैं कि नेता को मौका देखकर अपना रंग बदलना पड़ता है। 'जैसी बहै बयार, पीठि तब तैसी दीजै' तथा 'गंगा में रहे तो गंगा दास और यमुना में रहे तो यमुनादास—जैसे



शेष पृष्ठ ३६ पर

सचिव का जबाब

गोपाल चौरसिया

क्षेत्र के दौरे पर
जन आक्रोश देखकर
मंत्री ने सचिव से
झल्लाकर पूछा ?
हमारे क्षेत्र की ये हालत
क्यों होती जा रही है ?

सचिव ने
धीरे से दिया जबाव—
सर;

जनता अब—
समझदार होती जा रही है।

क्षत्राणी का कोप

गोपाल चौरसिया

एक मंत्राणी मंडल की बैठक में
एक रात
अनुशासन की बात पर,
एक क्षत्राणी को निकाल दिया।
तो वह तुरन्त
कोप भवन में जा—
रैनी की तैयारी करने लगी।
प्रातः वापिस लिए जाने की सूचना-पा,
क्षत्राणी ने कहा—
क्षमा करना, कल रात—
और कुछ नहीं—
मेरे सिर में दर्द था।

राजनीत

गोपाल चौरसिया

मंत्री मंडल में
पुनः लिए जाने पर—
एक पत्रकार नेता जी से पूछा ?
'पहले निकाले जाने पर'
आपका कहना था—
'मैं बोझ से हल्का हुआ हूं'
यह आपकी
क्या नीत है ?
नेता जी बोले—
यह नीत नहीं राजनीत है।

भारत के पक्षी एलबम सीरीज

हम इस कॉलम में प्रति सप्ताह भारत के एक पक्षी का सुन्दर चित्र सहित परिचय देंगे। आप इन्हें काट कर अपने व दोस्तों के मनोरंजन व ज्ञान के लिये एलबम बना सकते हैं।

ट्रैगोपैन



ट्रैगोपैन हिमालय का पक्षी है। इसकी चार जातियां पूर्वी हिमालय प्रदेश में पायी जाती हैं। मैलानो सफालस, सैटाइरा, ब्लाइथी तथा टैमिकी। ऊपर टैमिकी ट्रैगोपान का चित्र है। ट्रैगोपान देखने में बिल्कुल देसी मुर्गी सा लगता है। दूर-दूर क्षेत्रों में यह अकेला, जोड़ों में अथवा कभी-कभी छोटे परिवार में पाया जाता है। यह शर्मीला पक्षी खटका पाते ही घनी झाड़ियों में छिप जाता है। इसका मुख्य-मुख्य आहार पौधों की जड़ें, घास के बीज तथा कीट मकोड़े व उनके अंडे हैं। चारों जातियों में से ब्लाइथी जाति समाप्त होने के निकट है। इसे जाल द्वारा पकड़ा जाता है। नागालैंड के घने जंगलों में पायी जाने वाली यह जाति बहुत कम देखने में आती है। नर के भूरे,- लाल रंग की गर्दन, गर्दन के नीचे हरा चकत्ता, लाल रंग के परों में भूरे-सफेद रंग के दाग होते हैं, मादा गहरे ब्राउन रंग की होती है जिस पर भूरे-चकत्ते होते हैं। इन्हें समाप्त होने से बचाने के लिए कोहिमा चिड़ियाघर में इन्हें पाला जा रहा है। दुनिया भर के चिड़िया घरों में इस पक्षी की बड़ी मांग है। एक जोड़े के दस हजार रुपये तक विदेशी चिड़िया घर देते हैं।

फैसला

गोपाल चौरसिया

इस बार चुनाव में
एक ग्रामीण मतदाता के पास
नेता जी जब,
हाथ जोड़कर पहुंचे।
तो;
मतदाता देखते ही घबरा गया।
उनके पैरों में गिर गया।
नेता जी बोले—
अरे, यह क्या करते हो।
भाई होकर पैर पड़ते हो।
लेकिन ग्रामीण,
उन्हें देकर एक का नोट, बोला—
रहने दीजिए
जरा रहम कीजिए
पिछले पांच साल मैंने—
खूब भुगत लिया है।
इसीलिए छुड़ाने को पीछा—
'वोट' की जगह 'नोट' दिया है।

पृष्ठ ३४ से आगे

नेताशास्त्र के सुभाषितों को आपने सुना ही होगा। हमारे नेता गिरगिटानन्द जी मौका देखकर अपना रंग बदल लिया करेंगे। ये हमेशा बहुमत में रहेंगे क्योंकि विधानसभा में इनकी कुर्सी पीछे रखी जायेगी। प्रतिदिन ये बहुमत वाले पक्ष की ओर अपनी कुर्सी खिसकाकर उस पर आसीन हो जाया करेंगे।

इसके बाद स्वानराज को मौका मिला। उनके समर्थक कूकर दास ने कहा—'भाइयों, आप लोग स्वान पार्टी को ही अपना कीमती मत दें। हमारे नेता स्वानराज एक कुशल नेता की तरह दूसरों की रोटी पर ही जीते हैं। वे नेता की तरह दुम हिलाना और मौका देखकर झपट्टा मारना भी अच्छी तरह जानते हैं। सामने कमजोर को देखर गुर्राने और अपने से अधिक शक्तिशाली के सामने आते ही रफूचक्कर हो जाने की कला के वे उस्ताद हैं जिसे एक नेता को सीखने में वर्षों लगा जाते हैं।'

तब गिद्धराज के समर्थक दूरदर्शी जी उठ खड़े हुये—'प्यारे भाइयों, आप लोग अपना बेशकीमती उच्च कोटि का मत उच्च उड़ानें भरने वाले गिद्धराज को ही प्रदान करें। ये हर मुर्दे की खबर रखते हैं और पलक झपकते ही वहाँ पहुंच जाते हैं। ये अपनी हवाई योजनाओं से वन-प्रदेश का कायाकल्प कर देंगे। ऊंची कुर्सी पर बैठकर भी इनकी नजर कुशल नेता की तरह नीचे को ही रहती है।'

तदुपरान्त तोतामाल की पेशकश करते हुए उनके प्रचारक सुगनमन बोले—'भाइयों हमारे नेता तोतामल जी दूसरों की नकल करने में किसी नेता से कम नहीं हैं। ये विदेशों की नकल करके उन्हीं की बोली बोलने में सभी को माहिर कर देंगे। आप लोग इन्हें ही विजयी बनाइये। रट्टू के टट्टू नेता के सभी गुण तोतामलजी में जन्म जात हैं।'

अध्यक्ष के पद पर सुशोभित गर्दभराज बैसाखनन्दन इधर-उधर ताक-झांक कर बड़ी देर से कुसमुसा रहे थे क्योंकि उनके समर्थक गधाचन्द्र अभी तक चुपचाप मुंह लटकाये दूसरों की बातें सुनने में ही मशगूल थे। अपनी बात कहने के लिए घुसपैठ की कला से वे अनभिज्ञ थे। इसलिये बैसाखनन्दन ने स्वयं ही उठकर कहा— 'प्यारे भाइयों, आप लोग मुझे ही अपना वोट दीजियेगा। मुझ पर आप कितना ही दौरे आदि का कार्यभार लाद दीजिये मैं कभी उफ नहीं करूंगा। मार खाते-खाते मेरी पीठ परिपक्वावस्था को प्राप्त हो चुकी है। इसलिये यदि किसी सभा या प्रदर्शन में मुझे श्रोतागण या पुलिस की मार पड़ी तो मैं गीदड़ चन्द्र की तरह भागूंगा नहीं। मुझमें दूसरे की गालियां सुनने का भी अपार धीरज है। आप यकीन मानिये, मुझ पर अपने या विरोधी पार्टियों के मेम्बरों की गाली और नुक्ता चीनी का कोई भी असर नहीं होगा। मैं कुशल और अनुभवी नेता की तरह मारप्रूफ के साथ-साथ गाली प्रूफ भी हूं। विरोधी पार्टियों के लोग विधानसभा में मेरी कितनी भी आलोचना करें, मैं चूं नहीं करूंगा और सबसे बड़ी बात तो यह है कि मुझमें 'गधापन' भली भांति झलकता है जो एक नेता के लिए अत्यावश्यक गुण है।

'आपने यदि मुझे चुनाव में विजयी बनाया तो मैं धोबीघाट को नदी से हटाकर प्रत्येक घर के सामने कर दूंगा। इससे कपड़ों की धुलाई और सड़क की सफाई दोनों साथ-साथ होती रहेंगी। धोबी घाट तक जाने के मार्ग-व्यय की भी बचत होगी। मेरी दूसरी योजना है कि मैं यातायात के साधनों में मोटर, रेल और हवाई जहाज के साथ-साथ गधे को भी रजिस्टर्ड करा दूंगा। मैं अपनी पार्टी के मंत्री को नौलखा बँगले से विधानमंडल तक अपनी मखमली पीठ पर लादकर ले जाया और लाया करूंगा। मुझमें वे सभी गुण जन्मजात हैं जो एक नेता को सीखना और सिखाना पड़ता है।

'मैं एक प्रस्ताव विधान सभा में रखूंगा कि सभी गधों को सरकारी नौकरी में ऊंचे ओहदे दिये जायें। लोग सुबह-शाम गधे को ही सलाम ठोका करें। उन्हीं की तरक्की हो जो बिलकुल गधे हों। राजकाज के सारे काम 'ची पों, ची पों' के जयघोष से प्रारम्भ किये जाया करें। मैं आप सभी की सेवा में दिन रात जुटा रहूँगा। अतः आप ही फैसला कीजिये कि आप अपना बहुमूल्य वोट…।

मिस्टर गर्दभराज का अध्यक्षीय भाषण समाप्त भी न हो पाया था कि एकाएक 'जिन्दाबाद' के नारों से आकाश गूंज उठा। चुनावी चहल-पहल भारी हंगामा में बदल गई। शोर शराबे में कुछ सुनना भी मुश्किल हो गया।

उसी समय बुलबुल ने मीठे स्वरों में कहा—'भाइयों, ये सभी उम्मीदवार मानव लोक की नेताशाही को हमारे पशुलोक में भी लाकर हमारे भी आनन्द-चैन को बरबाद करने पर तुले हैं। हम पशु हैं, मनुष्य नहीं। हमें तो ऐसे नेताओं को बरदाश्त नहीं करना चाहिये जो मनुष्य की तरह हमारे ऊपर शासन भी करें और हमें चूसना भी प्रारम्भ कर दें। आप लोग यदि सचमुच अपना हित चाहते हैं तो अपना नेता हंसराज को चुनिये जो नीर-क्षीर का विवेक रखते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि सबसे बुद्धिमान और योग्य होते हुए भी वे अपने बारे में चुप हैं।………''

बुलबुल की बात पूरी भी न हो पाई थी कि हाँफती हुई कोयल पहुंची और कहने लगी—'प्रजातंत्र की आंधी तो हमारे प्रदेश से कब की विदा हो चुकी है।''

पुण्य-कमाई

हुड़दंग नगीनवी

कहा एक सहेली ने दूसरी से,
बहिन मेरे पति नित्य
हजारों व्यक्तियों को मुफ्त भोजन कराते हैं।
दूसरी ने दिया उत्तर ?
तब तो वे काफी पुण्य कमाते हैं
किंतु करते क्या हैं, पति तेरे ?
पहली ने दिया उत्तर,
वे हैं होटल में बरे।

सही तथ्य

—आजाद रामपुरी

'आम नागरिक
देश के दम घोंटू वातावरण से,
क्यों ऊब रहा है ?'
पूछा उनसे तो,
वे बोले—नहीं,
वह तो हमारे झांसेमयी भाषणो के—
अथाह सागर में,
उछर-उछर कर,
खुशी से डूब रहा है !'

अलबम चित्र



अमोल पालेकर व मौसमी चटर्जी
फिल्म 'दो लड़के दोनों कड़के' में



जितेन्द्र व अमजद खान फिल्म 'जानदार' में



बिन्दु व सजीव कुमार फिल्म 'मैं जानती हूं' में



आशा पारेख व बिन्दिया गोस्वामी
फिल्म 'प्रेम विवाह' में



शिरोमा व अंजना
फिल्म 'तीन चेहरे' में

चना कुरमुरा

● ग्राहक ने दूध का गिलास देखा और उबल पड़ा ! वेटर से गुस्से में बोला, 'तुम कहते हो यहां शुद्ध दूध दिया जाता है। यह गिलास देखो ऐसे लगता है जैसे नींबू पानी हो।' वेटर बोला, 'सर, दूध तो ठीक है। यह नींबू पानी जैसा इसलिए दिखा रहा है क्योंकि गिलास गंदा है।'

● फौजी अफसर, 'सार्जेन्ट, सारा कैम्प सूना है ! सारे गये कहां गये ?'

सार्जेन्ट, 'पता नहीं सर ! यहां तो हम दो ही रह गये हैं।'

● एक वायुयान दुर्घटनाग्रस्त होकर देहाती क्षेत्र में गिर गया। वायुसेना केन्द्र वाले जीप लेकर उस दिशा में दौड़े। एक जगह जीप रोककर पास खड़े देहाती लड़के से अफसर ने पूछा, 'इधर कहीं एक जहाज कुछ देर पहले गिरा ! तुमने गिरते देखा उसे ?'

लड़का पीला पड़ गया ! हाथ की गुलेल जेब में डालते हुए हकलाकर बोला, 'मैंने नहीं देखा साहब ! मैं सच कहता हूं मैं तो गुलेल से चिड़िया मार रहा था।'

● एक सभा में दो सदस्यों में तू-तू मैं-मैं हो गई। एक बोला, 'मैंने आज तक तुम सा बेवकूफ नहीं देखा।'

दूसरे ने जवाब दिया, 'तुम से बड़ा मूर्ख तो दुनिया में ढूंढ़े भी नहीं मिलेगा।'

सभापति ने फटकार कर कहा, 'आप दोनों ने अभी तक शायद मुझे नहीं देखा है।'

● एक आइसक्रीम बेचने वाले का लड़का जब दसवीं बार आइसक्रीम लेकर माँ के पास आया तो वह नाराज होकर बोली, 'तेरे पिताजी को पता नहीं है कि ज्यादा आइसक्रीम खाने से गला खराब हो जाता है ? हर बार आइसक्रीम पकड़ा देते हैं।'

लड़का बोला, 'मैं अपने लिए थोड़े ही मांगता हूं ! कहता हूं कि मम्मी मंगा रही हैं।'

● एक निराश युवक आत्म-हत्या करने जा रहा था। रास्ते में ज्योतिषी मिला, 'अपने भविष्य का हाल जानिये।'

युवक बोला, 'मुझे जानकर क्या करना है। मैं तो आत्म-हत्या करने जा रहा हूं।'

ज्योतिषी ने हिम्मत नहीं छोड़ी, 'भैया कम से कम यही जान लो कि आत्म-हत्या की कोशिश में सफल होंगे या नहीं।'

● दो व्यक्ति झगड़ रहे थे। एक ने गरजकर कहा, 'मैं तेरे चालीस के चालीस दांत तोड़ दूंगा।'

एक व्यक्ति जो दोनों का झगड़ा देख रहा था बोला, 'भाई साहब दांत बत्तीस होते हैं।'

उसे उत्तर मिला, 'मुझे पता था तू बीच में जरूर बोलेगा इसलिए मैंने आठ दांत तेरे भी जोड लिए थे।'

● ग्राहक—वेटर, दाल में मक्खी कैसे है ?'

वेटर—'साहब, आजकल हमारे पास डी डी. टी. खत्म हो गयी है इसलिए हमारे कुक मक्खियों को दाल में डुबो-डुबो कर मार रहे हैं।

सोचिये

५ रुपये जीतिये

नींबू

एक यूनिवर्सिटी में एक प्रयोग किया जा है। एक क्लास के बीस विद्यार्थियों को एक थैले में से हर सोमवार को एक-एक नींबू दिया जाता है और प्रत्येक को यह आदेश दिया जाता है कि वह हमेशा अपने नींबू से सम्पर्क बनाये रखे। दिन व रात पास रखे, उसे देखता रहे, छूता रहे और सूंघता रहे। उस पर कोई निशान लगाने की सख्त मनाही है। बुधवार को अध्यापक बगैर पूर्व सूचना के सबको अपना-अपना नींबू थैले में डालने के लिए कहता है। जब सब थैले में डल जाते हैं तो एक-एक विद्यार्थी से अपना-अपना नींबू पहचान कर निकालने के लिए कहा जाता है। हर विद्यार्थी बगैर किसी हिचक या दुविधा के अपना-अपना नींबू पहचान कर चुन लेता है। विद्यार्थियों का कहना है कि हम अपने नींबू को अपने रिश्तेदारों से भी ज्यादा अच्छी तरह पहचान जाते हैं।

सारांश—इस कहानी का सारांश बताइये।

अन्तिम तिथि— २६ मई १९७६

पता : दीवाना साप्ताहिक ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२



पृष्ठ १२ से आगे

गाड़ी रुकते ही वह लपककर डिब्बे के पास पहुंच गया···सामने ही बुग्रा ग्रपनी दो बच्चियों के साथ उतरने के लिए तैयार थीं···उसने बुग्रा को नमस्ते किया ग्रौर कुली को सामान उतारने के लिये कहा···फूलवती उसे दिखाई नहीं दी ग्रौर शायद इस कारण उसे ग्रपना हृदय बैठता हुग्रा-सा ग्रनुभव होने लगा···फिर ग्रचानक ही उसे फूलवती बाथरूम से निकलती दिखाई दी···उसने गुलाबी साड़ी पहन रखी थी जो उसके ग्रपने फूलों जैसे गुलाबी गालों से मेल खा रही थी—उफ···! कितनी सुन्दर हो गई है फूलवती···वह चंद क्षण ग्रवाक् खड़ा उसे देखता रह गया···फूलवती का फूल-सा गुलाबी चेहरा जाने क्यों बिल्कुल गुलनार हो गया।

तांगे में सामान रखवाकर विनोद दोनों बच्चियों को लेकर ग्रागे बैठ गया···बुग्रा ग्रौर फूलवती पीछे बैठी थीं। फूलवती विनोद की ग्रोर थी ग्रौर उसकी पीठ जब विनोद की पीठ से स्पर्श करती तो वह सपने की-सी मस्ती ग्रनुभव करता···था तो वह ग्रगली सीट पर लेकिन उसकी कल्पना में फूलवती का समस्त शरीर अंग-प्रतिअंग घूम रहा था···ग्रब वह दस-बारह वर्ष की वह लड़की नहीं थी जो बचपन की सीमा छोड़कर युवावस्था में प्रविष्ट कर रही थी जिसके मुख पर जवानी की लाज ग्रौर बचपन के भोलेपन का मिश्रण-सा था—ग्रब तो फूलवती उन्नीस वर्ष की एक सुन्दर ग्रौर जवान लड़की थी···भरे-भरे सुडौल शरीर पर गोल-मा चेहरा बड़ा सुन्दर लग रहा था···सबसे ग्राकर्षक चीज उसके चेहरे पर जो थी वह उसकी ग्रांखें थीं···बड़ी-बड़ी कटोरा-सी काली ग्राखें थीं जिनसे एक ग्रजीब बेचैनी-सी भी टपकती थी···ऐसी बेचैनी जैसे वह किसी को खोज रही हों···फूलवती ने कई बार विनोद की ग्रोर देखा···उसके होंठों पर लजीली-सी मुस्कान थी लेकिन विनोद ग्रधिक समय तक फूलवती से ग्रांखें न मिला सका···उसे ऐसा लगता था ग्रगर वह ग्रधिक देर तक फूलवती की ग्रांखों में देखता रहा तो वह गिर जाएगा···पता नहीं उन ग्रांखों में क्या था···एक बेचैनी भी ग्रौर एक प्रकार का निमन्त्रण भी···।

शाम हो गई किन्तु विनोद को फूलवती से एकबार भी बात का ग्रवसर न मिल सका···जब से वह ग्राई थी कामिनी ग्रौर राधा उसे घेरे हुए थीं स्वयं विनोद बड़ी देर तक पिताजी, मां ग्रौर बुग्रा के साथ बड़े कमरे में बैठा रहा था···कुछ देर के लिए वह राजेश से मिलने भी गया था···फिर शाम तक ग्रपने कमरे में ही रहा···।

खाना पकने में देर हो गई···सात बज रहे थे इसलिए वह खाने की प्रतीक्षा में बड़े कमरे में बैठा था···घर में बड़ा ऊधम मच रहा था···लेकिन वह एक ग्रोर बैठा कोई उपन्यास देख रहा था···उसे पता नहीं था कि फूलवती घर के किस भाग में थी लेकिन वह उसकी ग्रावाज जरूर सुन रहा था···वह भारी-भारी जवान स्त्री की ग्रावाज जिसमें रस भी था ग्रौर मिठास भी थी।

सवा सात बजे सरिता ग्रा गई···पहले दिन से ही सरिता को ग्रादत हो गई थी कि मां ग्रौर पिताजी को नमस्ते करती हुई सीधी विनोद के कमरे में चली जाती थी···किसी से व्यर्थ बातों में समय नष्ट नहीं करती थी···हां, कभी-कभी मां रोककर कुछ पूछ लेती थीं तो उत्तर दे देती थीं···ग्रब भी वह ग्रांगन में ठहरी नहीं···मांजी ग्रौर पिताजी को नमस्ते करती हुई···घर में कुछ नए व्यक्तियों को देखती हुई बड़ी खामोशी से विनोद के कमरे की ग्रोर बढ़ी···लेकिन विनोद बड़े कमरे में ही मिल गया···वह उसे देखकर वहीं रुक गई···विनोद खड़ा हो गया।

"तुमसे कई बार कहा है···मैं ग्राऊं तो खड़े मत हुग्रा करो···मैं तुम्हारी शिक्षक नहीं विद्यार्थिन हूं···"

"ग्रोह···यह बात नहीं सरिता···।" पता नहीं क्यों इस समय विनोद बात करते हुए बौखला गया।

"ग्ररे···तो घबराते क्यों हो? जो बात हो कह दो।" सरिता ने उसे ग्राश्चर्य से देखते हुए कहा।

"मेरी बुग्रा ग्राई हैं ग्राज गांव से···।"

"मतलब···ग्राज पढ़ा नहीं सकोगे?"

"ब···ब···बात यह है कि—।"

"हूं···साफ बात करते हुए घबराते क्यों हो? मैं कल ग्रा जाऊंगी···।" सरिता ने कहा ग्रौर बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए दरवाजे से निकल गई···ग्रांगन में पहुंचते ही मां ने पुकार लिया···।



"यह सरिता है—" मां ने बुआ को बताया, "बड़ी अच्छी लड़की है—विनोद से पढ़ने आती है।"

सरिता नमस्ते करके चुपचाप बैठ गई ...वह कुछ गम्भीर थी...बुआ ने ध्यान से उसे देखा लेकिन कुछ बोली नहीं...हां बड़ी बुआ के नथुने जरूर फूल गए थे—वह वहीं बैठी थीं—।

"आज पढ़ा नहीं ? "पिताजी ने सरिता से पूछा।

'बुआ आई हैं इसलिए आज विनोद ने छुट्टी दे दी।" सरिता ने गम्भीरता से कहा...।

फिर उसकी दृष्टि दूसरे पलंग पर बैठी हुई उस लड़की की ओर उठ गई जो कामिनी और राधा के साथ बैठी हुई ध्यानपूर्वक सरिता को देख रही थी। सरिता ने लापरवाही से दूसरी ओर मुंह मोड़ लिया—फिर कामिनी ने सरिता को पुकार लिया और वह उठकर उधर चली गई...कामिनी ने कहा—

'यह हमारी फुलवा दीदी हैं...और आप सरिता दीदी—!"

बैठिए—!" फूलवती ने धीरे से कहा।

'मैं फालतू कभी नहीं बैठती...मुझे पढ़ना है—।" सरिता ने गम्भीरता से कहा।

तो जाइए—!" पटाक् से कामिनी बोली।

सरिता ने आपत्ति-भरी दृष्टि से कामिनी की ओर देखा और दरवाजे की ओर मुड़ गई।

'बड़ी नकचढ़ी मालूम होती है।" सरिता के जाने के बाद फूलवती ने होंठ बिगाड़कर कहा—।

'पता नहीं क्या दिमाग पाया है।" कामिनी अप्रिय से स्वर में बोली, "मुझे तो एक आंख नहीं भाती।"

तुम्हारे भैया इसे पढ़ाते हैं ?

'ऐ...वाह...वाह...' कामिनी ने चुटकी लेकर कहा, 'मेरे भैया हैं और तुम्हारे कौन हैं जो नाम नहीं ले रहीं।"

'चल हट...नटखट कहीं की—।" फूलवती के चेहरे पर लाली दौड़ गई। वह सरिता के बारे में सोच रही थी ...यह सुन कर उसे अजीब-सा लगा था कि सरिता विनोद से पढ़ती है—।

सरिता विनोद के घर आई हुई उस नई लड़की के बारे में सोचती हुई अपने घर की ओर चल पड़ी...कामिनी ने उसका नाम फूलवती बताया था—आठ बज चुके थे... सर्दियों की अंधेरी रात थी...गलियों में इतना अंधेरा था कि हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था...न जाने क्यों आज बिजली के खम्भों में लगे बल्बों में भी प्रकाश नहीं था—शायद लाइन में कुछ विकार उत्पन्न हो गया था... राजेश की बैठक के सामने से गुजरते हुए अचानक वह ठिठककर रुक गई थी—अंधेरे में नजाने किधर से एकाएक दो परछाइयां आईं और सरिता की पीठ में चाकू की नोक इतनी धंस गई थी कि थोड़ा-सा हिलने-जुलने से भी घाव लग जाने का खटका था।

'चिल्लाओगी...तो याद रखो पूरा चाकू तुम्हारी पीठ में धंस जाएगा।" अंधेरे में किसी ने धीरे से कहा।

'मैं कायर नहीं हूँ जो चीखूं-चिल्लाऊंगी ...'' सरिता ने जहरीले स्वर में कहा, 'तुम दोनों अगर मर्द हो तो चाकू हटा लो मेरी पीठ से...मैं तुम्हारी बैठक में चलती हूं—"

'गुड—तुम काफी समझदार मालूम होती हो।" दूसरे ने कहा।

'और तुम लोग...।" सरिता का स्वर क्रोध से बिगड़ा हुआ था।

दोनों आदमियों ने सरिता की पीठ से चाकू हटाकर उसे बाहों से दबोच लिया और राजेश की बैठक में घुस गए...बैठक में राजेश शायद नहीं था—चट की आवाज के साथ बिजली जल उठी... स्विच दबाने वाला मोहन था और सुरेन्द्र विजयी ढंग से खड़ा मुस्करा रहा था...दोनों के हाथों में खुले चाकू थे...यह दोनों ही विनोद के लंगोटिए यार थे और आज नीच बनकर सरिता से इस बुरी हरकत पर उतर आए थे...लेकिन सरिता उनकी इस नीच हरकत से सहमी नहीं थी...अब वह पूर्ण रूप से संभल गई थी और बड़े सन्तोष से खड़ी दोनों को घूर रही थी...एक तो प्रकृति से ही वह साफ-सतर्क रहने वाली निडर लड़की थी दूसरे शायद उसके मन में था कि यह लोग अपनी नीच हरकतों से कभी उसे जरूर दबोचने का प्रयत्न करेंगे

और मानसिक रूप से वह ऐसी परिस्थिति के लिए तैयार थी...उसने पहले ही विनोद को उसके दोस्तों के चरित्र के बारे चेतावनी दे दी थी—।

'उस दिन...मेरे जरा-सी बात कह पर तुमने मेरे गाल पर थप्पड़ दे मारा... सुरेन्द्र ने मुस्कराकर सरिता की ओर देख हुए कहा, 'और आज—।".

'मत समझो कि मैं विवश होकर यह आई हूँ...और तुम अपनी मनमानी क लोगे..." सरिता ने तीखे स्वर में कहा 'अगर तुम्हारे मन में अपनी शक्ति के बा कोई भ्रम हो तो आओ...अब आगे बढ़ो... जरा देखूं कैसे हाथ उठाते हो मुझ पर।"

मोहन बिजली के पास ही खड़ा रह गया...सुरेन्द्र आश्चर्य से सरिता की आंखें में देखने लगा।

'मैं लड़की जरूर हूं सुरेन्द्र साहब,' सरित ने जहरीली मुस्कराहट के साथ दृढ़ स्वर कहा, "लेकिन अगर इतनी दुर्बल होती वि आप जैसा कोई कायर अमानुष अपन कामुकता का सहज ही शिकार बना सके त यूं आजादी से कभी सड़कों पर न घूमा करत —समझे ? मुझे आधीन करने के लिए लो का दिल-गुर्दा और इस्पात की शक्ति चाहि ...आओ बढ़ो...प्रयत्न करके देख लो...तु लड़के हो...दो हो...मुझसे तगडे भी हो... मैं अकेली भी हूं और लड़की हूं...लेकि बताए देती हूं मेरी संकल्पशक्ति बहुत दृढ़ —आगे बढ़ो...मैं खड़ी हूं...हाथ लगा देखो...।"

सुरेन्द्र केवल होंठों पर जबान फेर क रह गया...मोहन में इतना साहस नहीं थ कि अपने स्थान से भी हिल सकता।

'अपराध और पाप के लिए भी शक्ति चाहिए तुम दोनों कायर हो...गीदड़ कहीं ...नीच..." सरिता ने घृणा से जमीन प थूक दिया और दरवाजे की ओर बढ़ी—

क्रमशः

मिली जुली पहेलियां

१. वह कौन-सा शहर है जिसमें ... रहती हैं ?

२. वह कौन-सा शहर है जिसमें एक आं... वाले रहते हैं ?

३. वह कौन-सा शहर है जिसमें लकीर है...

उत्तर—१. बनारस २. बीकाने... ३. कालीकट।



एस० चन्द्रा "शाह" रसूलपुर, "मधुर मेन्शन" आराबकी २२५०४१, १६ वर्ष, स्विमिंग, प्रत्येक सुन्दर वस्तु से प्यार करना, फिल्म देखना।



चेतन दास बरयानी, सिन्धी कालोनी, मकान नं० २२०, भरथना, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, विदेश यात्रा करना।



नौशाद अहमद सरी, ६०/२३३, हमवा मंजिल, कानपुर, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, टिकट संग्रह, रास्ते बनाना, दोस्ती करना।



एस० बलजीत सिंह, छत्तीस पाड़ा, द्वारा देवराज, खड़गपुर, १७ वर्ष, पढ़ना, कविता लिखना, फिल्म देखना, फरमाईश भेजना।



संजीव कुमार पुण्यायान, कमल टाकीज, बबुलागंज फगीस्थान, खगड़िया (मुंगेर), १८ वर्ष, तार भेजना, टेलीफोन करना।



धर्म काजी "निर्दोषी", द्वारा श्री राम कपड़ा उद्योग, नारायण ग्रा० चितवन, नबिन रोड (नेपाल), १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



बिमल कुमार मोहता, डी० १६/६३, बाँसड नगर, गोरेगांव, बम्बई, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, घूमना, अच्छा खाना खाना, पत्र लिखना।



महेश घर्मानी, द्वारा जगदीश जनरल स्टोर्स, बैरन बाजार, रायपुर, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, हाकी खेलना, जैवलिंग फेंकना।



गोविन्द राम बाल्मीकि, सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, कुजाया कोलयरी, २३ वर्ष, छोटे बच्चों से प्यार करना, फिल्म देखना, दोस्ती करना।



काजी बाबू हवका, भक्तपुर पिखेल, (नेपाल), २५ वर्ष, संगीत सीखना और खानदानी लोगों से पत्र मित्रता करना, टेलीविजन देखना।



चन्द्र श्रेष्ठ, द्वारा चेत बहा, राष्ट्रीय वाणिज्य बैंक, बालाज शाखा, काठमाडो (नेपाल) १६ वर्ष, सैर करना, पत्र-मित्रता करना।



पप्पी खुराना 'मायूस' ५४/३, खुराना भवन जींद, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, दाढ़ी, बढ़ाना, बेडमिंटन खेलना तथा रेडियो सुनना।



एस० ईनायतुल्लाह, फाईव स्टार वाच, एण्ड पेन क०, मेन रोड रांची, २० वर्ष, देश-विदेश की सैर करना, हवा में टहलना।



मो० जहाँगीर, फाईव स्टार वाच एण्ड पेन का०, मेन रोड रांची, १० वर्ष, गाना सुनना, रेडियों पर कमेंट्री सुनना, दोस्ती करना।



महेश मौर्य, सेक्टर ५/३७१, आर० के० पुरम, नई-दिल्ली, २० वर्ष, समाज सेवक, लेखक, छात्र नेता, युवाओं का दोस्त और दीवाना का पाठक



अजय कुमार श्रीवास्तव कुम्हिया पो० खरपोखरा भाया लगई पुर प० चम्पारण (बिहार) १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फिल्में देखना, सैर करना।



रवि देविदास गेताम, उपनगर उत्तर ३७, नासिक-४२२००६, १७ वर्ष, सिनेमा देखना, दोस्ती करना और दीवाना पढ़ना, रेडियो सुनना।



सुनीलकुमारआनन्द, IX/०१८ प्रेम गली ३८, गांधी नगर, दिल्ली-३१, १७वर्ष, रामलीला में चार्ली चेप्लीन का रोल करना और लोगों को हंसाना।



मोहन बिश्वा (साहुकार) सातानी हासीमारा इण्डस्ट्री, १६ वर्ष, बड़ों को आदर करना बच्चों को प्यार करना और दीवाना पढ़ना।



अनिल कुमार, गली नं० १२ नई बस्ती, मानसा, जिला भटिंडा (पंजाब १६ वर्ष, नावल पढ़ना और पढ़ाई करना, दोस्ती करना।



प्रिंस दीवान सिंह, पंजाब टेलरिंग हाउस, खजांची बिल्डिंग, के० ई० एम० रोड, बीकानेर, २४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, घूमना।



जयनारायण मित्रुका, भद्रपुर-४, नेपाल, १५ वर्ष, पत्रिका पढ़ना, टिकट जमा करना, घूमना, सिनेमा देखना और गाने गाना।



सुरेश वर्मा म० न० ११३/१३ आजाद सिमेंन्ट जाली वर्कस जी० टी० रोड पानीपत १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, मित्रता करना।



गोविन्द कनगोय, भद्रपुर, नेपाल, १५ वर्ष, बड़ों की सेवा करना, सिनेमा देखना, डाक टिकट संग्रह ,करना, फोटोग्राफी करना।



रणपाल सिंह 'गील' ६/८ सिंग सभा रोड, सब्जी मंडी दिल्ली-७ १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, सिनेमा देखना और गाने गाना।



महेश घर्मानी द्वारा जगदीश जनरल स्टोर्स, बैरन बाजार, रायपुर (म. प्र.) १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, बड़ों की सेवा करना।



सजय साहनी, ३१० भरतीपुर, जबलपुर (म० प्र०) १५ वर्ष, स्टेम्प कलेक्टिंग, स्केटिंग, स्विमिंग, दीवाना पढ़ना, सिनेमा देखना।



दुबेलाल जैन, सं०य प्रोडक्ट, गोकीगंज, छिंदवाड़ा, (म. प्र.) २४ वर्ष, पत्र लिखना, टिकट संग्रह, दीवाना पढ़ना व नये कारखाने खोलना।



नरेश कुमार गुप्ता, अशोक होटल, टैक्सी स्टैण्ड नं० ४ झरिया, १२ वर्ष, पतंग उड़ाना गोली खेलना, दोस्ती करना, बच्चों को प्यार करना।



जगदीश होतवानी, ध्रुव क्लाथ स्टोर, गोल बाजार, रायपुर (म० प्र०) २० वर्ष, पत्र-मित्रता, माता-पिता की सेवा करना, फिल्म देखना।



मनमोहन मलहोत्रा, ०/४८६ रीषी नगर, रानी बाग, नई दिल्ली, २८ वर्ष, माडलिंग करना, स्टेज कलाकार, गाने गाना, फिल्म देखना।



महेश कुमार खारीवाल, पी० सी० खारीवाल, नेशनल इन्सोरेन्स कम्पनी लिमिटेड, संगरिया, (राज०) ३३५००३ संगीत, पत्र-मित्रता।



आनन्द कुमार होतवानी, मता एम्पोरियम, मालवीय रोड, रायपुर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता, डाक टिकट संग्रह, फोटोग्राफी करना।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर कैडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ______ शौक ______

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

तर्क-कुतर्क

तर्क—मैंने डांट खाई।

कुतर्क—भूख बहुत लगी होगी।

तर्क—ईमानदारी बड़ी चीज है।

कुतर्क—तभी ईमानदारी कम देखने को आती है। आजकल छोटी साइज की चीजों का फैशन है।

तर्क—मैं तुम्हें कष्ट देना चाहता हूं।

कुतर्क—पहली बार तुम कुछ दे रहे हो।

तर्क—मेरा दिल उखड़ गया है।

कुतर्क—डी० डी० ए० से बनवाया होगा।

तर्क—तुम दिल में बात छुपाते हो।

कुतर्क—तुम लॉकर में छुपाते हो?

हा हा हा

● प्रेमी :—'तुम्हारी काली घटाओं सी ये जुल्फें, प्यार का तूफान उठाती तुम्हारी आंखें···चेहरे पर बरसता नूर···ज्वार भाटे सी चढ़ती उतरती सांसें···'

प्रेमिका—बस, बस! तुम मेरा वर्णन कर रहे हो। या मौसम का हाल बता रहे हो?'

● सब माता-पिता एक जैसे होते हैं। पहले वह बच्चे को चलना और बोलना सिखाते हैं। जब वह सीख जाता है तो कहते हैं, 'चुपचाप बैठ जाओ।'

'मुझे आंखों में काजल लगाने वाली लड़कियों से नफरत है' काजल किरण



नासिर हुसैन की खोज काजल किरण अपनी प्रथम फिल्म 'हम किसी से कम नहीं' से चर्चा का विषय बन गईं और सफलता प्राप्त कर गयीं। ऐसी बहुत कम अभिनेत्रियां होती हैं जो प्रथम फिल्म से ही प्रसिद्धी पा जायें। इस हिसाब से काजल किरण भाग्यशाली अभिनेत्रियों में गिनी जाती हैं।

गोल मुंह की, इकहरे बदन की गोरी सुन्दरी काजल किरण के पास आज कई फिल्में हैं। जिनमें 'पागल प्रेमी' में यह एक नये अन्दाज में दिखाई देंगी।

फिल्मों में प्रवेश पाना और विशेषकर नवयुवतियों को, बहुत कठिन कार्य है। फिल्म 'पागल प्रेमी' के सैट पर काजल किरण से मुलाकात हुई तो सर्वप्रथम मैंने उनसे यही प्रश्न पूछा, 'आपको सर्वप्रथम इतना बड़ा और इतने काबिल निर्माता-निर्देशक (नासिर हुसैन) द्वारा कैसे ब्रेक मिल गया! जबकि फिल्मी दुनिया में बेहद संघर्ष के बावजूद भी अच्छी-अच्छी अभिनेत्रियां अच्छी तो क्या बुरी भूमिकायें भी हासिल नहीं कर पातीं।

मेरे इस प्रश्न पर काजल किरण का मुस्कराता चेहरा कुछ फीका सा पड़ गया, लेकिन वह शीघ्र ही बोल उठी, 'हमारे और नासिर साहब के फैमिली अफेयर्स पहले से ही रहे हैं। जब उन्होंने मुझे 'हम किसी से कम नहीं' की ऑफर दी तो मैंने भी मना नहीं किया।'

'इसका मतलब है अभिनय क्षमता के बजाय आप 'फैमिली अफेयर्स' के बल पर यह रोल पा गईं।' ई

काजल धीरे से मुस्कु

'अब आप कुछ भी समा

दर्शकों के पसन्द करने

हैं और फिल्म चलने के

कार चलता है। यदि म

न होती तो मैं सफल अ

की वाह-वाह कैसे लूट प

पसन्द किया है। इससे

है कि मुझमें अभिनय क्ष

'आप किसी विशे

अपनी जोड़ी बनाना चा

कलाकार के साथ एडजा

करती हैं?'

'सफल जोड़ी दर्शकों

बनती है। आज धर्मेन्द्र-हे

की जोड़ी को दर्शक पसन्द

यह दोनों जोड़ियां प्रसिद्धि

हैं। जिस फिल्म में यह ज

फिल्म को बनने से लेकर

कोई दिक्कत नहीं होती

दर्शकों ने किसी विशेष ही

की हो तो मुझे जोड़ी बनाने

होगा।' काजल किरण ने

बालों को कन्धे पर फेंकते

'आपको किन चीजों

किन बातों से नफरत है?

'मुझे गुलाब के फूल

मक्खियों से प्यार है।

लगाने वाली लड़कियों से

मैं स्वयं भी काजल नहीं ल

ने अपनी छोटी-छोटी आंख

दिखाते हुए कहा।

—वि

● एक कच्ची शराब

मुकदमा चल रहा था।

के तौर पर उसके पास से

शराब जूरी के मैम्बरों क

के मैम्बर अपने चैम्बर से

निकल आये।

'आपने फैसला कर

पूछा।

अग्रमाजूरी, 'मेटर

फैसले पर पहुंचने से पह

प्रमाण और चाहते हैं।'



ल किरन — जगमोहन

Regd. No. D (D) - 275

